युक्रांद

मन की शांति

(आचार्य श्री की अंतर्प्रेरणा)

मन की शांति के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता है।

हां - अशांति के प्रति बहुत कुछ किया जा सकता है।

और जहां अशांति नहीं है, वहां शांति है।

इसलिए, शांति को खोजो ही मत।

खोजो अशांति को।

पहचानो अशांति को।

वही है।

और जो है, उसी के साथ कुछ किया जा सकता है।

लेकिन, हम उलझ जाते हैं उसमें जो कि नहीं है और होना चाहिए।

बस यहीं भूल हो जाती है।

फिर अशांत मन शांत हो भी कैसे सकता है?

उसकी शांति की आकांक्षा और भी अशांति पैदा करगी।

नहीं – ऐसे चक्कर में ही मत पड़ना।

अशांति के प्रति जागो।

उसकी निंदा मत करना।

उससे लड़ना मत।

उससे मुक्त मत होना चाहना।

बस जानना उसे—यह रही।

पहचानना उसे– ऐसे रही।

खोजना उसे--ऐसे जन्मती है, ऐसे फैलती है, ऐसे विदा होती है।

और फिर वह नहीं जन्मती है।

अशांति का पूर्ण दर्शन ही अशांति से मुक्ति है।

●

आचार्य रजनीश : वे कौन हैं ?

(रेखाचित्र : श्री कमलेश शर्मा, रायपुर)

वे कुछ हैं
जो कि बहुत अद्‌भुत हैं
वे कुछ हैं जिनकी कि इस बीमार युग को
बड़ी जरूरत है
वे कुछ हैं जो कि 'कुछ' नहीं हैं,
वे कुछ हैं जो कि 'सब कुछ' हैं,
वे कुछ है जिनके पास जाकर कोई 'खो' जाता है
वे कुछ हैं जिनसे कि मिलकर कोई 'हो' जाता है,
वे कुछ हैं जिनका कि प्रेम निर्मम है,
वे कुछ हैं जिनकी कि निर्ममता प्रेम पूर्ण है
वे कुछ हैं जो कि आग–पानी साथ हैं ।
वे कुछ हैं जो कि रहस्यमय खुलापन हैं
वे कुछ हैं जो कि खुले हुए गोपन हैं
वे कुछ हैं जो कि शांति हैं, स्थिरता हैं
वे कुछ हैं जो कि गति हैं, हल चल हैं
वे कुछ हैं जो कि 'तुम' नहीं हो, 'मैं' नहीं हूं
वे कुछ हैं जो कि तुम भी हो, मैं भी हूं
वे कुछ हैं जो कि बुद्धि की पकड़ में नहीं आते
वे कुछ हैं जो कि शब्दों में समझाये नहीं जाते
वे कुछ हैं जिनसे कि बचने का कोई उपाय नहीं है
वे कुछ हैं जो कि अकेले में चु प चा प
पढ़ने लायक किताब हैं ।
वे 'कुछ' नहीं
शायद सिर्फ 'हैं'—
'सदा' से 'सदा' तक
और 'सब कहीं', से 'सब कहीं' तक
या फिर
'कभी नहीं' से 'कभी नहीं' तक
और 'कहीं नहीं' से 'कहीं नहीं' तक
आह ! वे क्या हैं ? और क्या नहीं हैं ?
'मैं' तो समझ नहीं पाता !
और, कौन समझ पाता है ?

--शिव

सत्य : दो प्रतिबिंब

(आचार्य श्री के प्रेरणा पत्रों से)

●

मौन ही मार्ग है उसका जिसका कि कोई भी मार्ग नहीं है।
शब्द तो भटकाते हैं।
क्योंकि शब्द मात्र परिचय हैं और वह भी परिधि का।
शब्द में जीना जीना ही नहीं है क्योंकि वह अस्तित्व के बाहर बाहर ही परिभ्रमण है।
प्रवेश है तो सिर्फ मौन में—पूर्ण मौन में।
जहाँ न शब्द हैं, न विचार, न विचारक है।
जहाँ सब मिट जाता है वहीं उसका साक्षात्कार है जो कि सब है।
सागर को जानना हो तो लहर को लहर की भाँति मिटना ही होता है।
लेकिन जो एक ओर से मिटता है, वही दूसरे छोर से होने का प्रारंभ है।
क्योंकि, लहर की भाँति मृत्यु, सागर की भाँति जन्म है।

●●

कहीं मांगने या पाने को कुछ है ही नहीं।
क्योंकि जो भी पाने योग्य है वह प्रत्येक को मिला ही हुआ है।
लेकिन हम स्वयं में देखें तब न ?
उस एक जगह को तो मनुष्य अनदेखा ही छोड़ देता है।
इसलिए हम भिखारी हैं।
अन्यथा, प्रत्येक स्वरूप से ही सम्राट होने का अधिकारी है।
परमात्मा सम्राट से कम का तो सृजन ही नहीं करता है।

मृत्यु पर विजय

(पिछले अंक में आपने द्वारका साधना शिविर का आचार्य श्री का उद्‌बोधन प्रवचन पढ़ा । उसी क्रम में यह प्रश्नोत्तर प्रवचन प्रस्तुत है ।)

रात की चर्चा के संबंध में कुछ प्रश्न पूछे गये हैं। एक मित्र ने पूछा है, होश से मरा तो जा सकता है लेकिन होश से जन्मा कैसे जा सकता है ?

असल में मृत्यु और जन्म दो घटनाएं नहीं हैं। एक ही घटना के दो छोर हैं। जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं और अगर सिक्के का एक पहलू हाथ में आ जाय तो दूसरा पहलू अपने आप हाथ में आ जायेगा। ऐसा नहीं हो सकता कि सिक्के का एक पहलू मेरे हाथ में हो तो दूसरा पहलू कैसे हाथ में लूं। तो दूसरा अपने आप हाथ में आ जाता है। मृत्यु और जन्म एक ही घटना के दो छोर हैं। मृत्यु अगर होश पूर्ण हो जाय तो जन्म अनिवार्य रूप से होशपूर्ण हो जाता है। मृत्यु यदि बेहोश हो तो जन्म भी बेहोश होता है। अगर कोई मरते क्षण होश में भरा हो तो अपने नये जन्म के क्षण में भी पूरा होश से भरा रहता है। मरते क्षण में बेहोश हो तो नये जन्म के क्षण में भी बेहोश होता है। हम सब बेहोश ही मरते हैं और बेहोश ही जन्मते हैं इसलिए हमें पिछले जन्मों का कोई स्मरण नहीं रह जाता लेकिन पिछले जन्मों की पूरी स्मृति हमारे मन के किसी कोने में सदा उपस्थित रहती है और यदि हम चाहें तो इस स्मृति को जगाया जा सकता है।

दूसरी बात जन्म के संबंध में सीधा कुछ भी नहीं किया जा सकता। जो कुछ भी किया जा सकता है वह मृत्यु के संबंध में ही किया जा सकता है क्योंकि मर जाने के बाद कुछ भी करना संभव नहीं है। मरने के पहले कुछ भी किया जा सकता है। एक व्यक्ति बेहोश मर गया तो यह बेहोश व्यक्ति जन्मने के पहले कुछ भी नहीं कर सकता है। कोई उपाय नहीं है। वह बेहोश ही रहेगा। इसलिए जन्म तो अगर आप बेहोश मरे हैं, तो बेहोशी में ही लेना पड़ेगा। जो कुछ भी किया जा सकता है वह मृत्यु के संबंध में किया जा सकता है क्योंकि मृत्यु के पहले हमें बहुत मौका है, एक पूरे जीवन का अवसर है और इस जीवन के पूरे अवसर में जागने का प्रयास हो सकता है। फिर अगर कोई मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहे कि मरते वक्त जाग जायेंगे तो वह बड़ी भूल में है। मरते वक्त नहीं जाग सकते हैं। जागने की साधना तो मरने के बहुत पहले शुरू कर देनी पड़ेगी। उसकी तो तैयारी करनी पड़ेगी क्योंकि अगर तैयारी नहीं है तो बेहोशी आ ही जायगी। बेहोशी हितकर है अगर तैयारी न हो तो।

काशी नरेश का एक आपरेशन हुआ पेट का १९१५ के करीब। वह पहला आपरेशन था पूरी पृथ्वी पर जो बिना बेहोशी की दवा से किया गया। पहले तो डाक्टरों ने इन्कार कर दिया। तीन अंग्रेज डाक्टर थे। उन्होंने इन्कार कर दिया कि यह संभव नहीं है क्योंकि किसी आदमी के पेट का आपरेशन हो और उसे बेहोश नहीं किया जाय तो पूरा खतरा है। खतरा यह है कि इतनी पीड़ा होगी कि वह आदमी चिल्लाने लगे, उछलने लगे, गिर पड़े। कुछ भी हो सकता है। लेकिन काशी नरेश का कहना यह था कि मैं जितनी देर ध्यान में रहूं उतनी देर कोई चिन्ता नहीं है और मैं डेढ़ घंटे, दो घंटे ध्यान में रह सकूंगा। काशी नरेश दवा लेने को राजी नहीं थे बेहोशी की। वे कहते कि मैं होश में ही आपरेशन कराना चाहता हूं और डाक्टर

होश में करने को राजी नहीं थे क्योंकि होश में उतनी पीड़ा से गुजरना खतरनाक हो सकता है लेकिन और कोई रास्ता न देखकर फिर उन्होंने पहले तो प्रयोगात्मक नरेश को ध्यान में जाने को कहा और कुछ हाथ पर छुरी चलायी ताकि वह पता लग सके कि जरा कंपन भी तो हाथ में नहीं होता है। लेकिन कंपन भी नहीं हुआ और दो घंटे के बाद ही नरेश कह सका कि हां मेरे हाथ में दर्द हो रहा है। दो घंटे तक तो कुछ पता नहीं चला। तब आपरेशन किया गया और वह पहला आपरेशन था पृथ्वी पर जिसमें पेट पर डेढ़ घंटे तक डाक्टर काम करते रहे पेट खोलकर और किसी तरह की बेहोशी की दवा नहीं दी गयी थी। नरेश पूरे होश में था। लेकिन इतने होश में होने के लिए गहरे ध्यान की जरूरत है। इतने ध्यान की जरूरत है जहां यह पूरा पता हो कि शरीर अलग है, और मैं अलग हूं, इसमें रत्ती भर भी संदेह न हो। रत्ती भर भी संदेह रहा कि मैं शरीर हूं तो खतरा हो सकता है। मृत्यु तो बहुत बड़ा सर्जिकल आपरेशन है इतना बड़ा आपरेशन किसी डाक्टर ने नहीं किया है जितना बड़ा मृत्यु है क्योंकि मृत्यु में प्राणों को एक शरीर से पूरा का पूरा निकाल कर दूसरे शरीर में प्रवेश करवाने का उपाय है। इतना बड़ा कोई आपरेशन नहीं हुआ है और न हो सकता है अभी। एकाध अंग हम काटते हैं, एकाध हिस्से को ही हम बदलते हैं। यहां तो पूरे प्राण की ऊर्जा को, शक्ति को एक शरीर से हटकर दूसरे शरीर में प्रवेश कराना है। तो प्रकृति ने पहले से इन्तजाम कर रखा है कि आप बेहोश हो जायें। यह हितकर है क्योंकि उतनी पीड़ा तो शायद झेली ही न जा सके और यह भी हो सकता है कि चूंकि उतनी पीड़ा नहीं झेली जा सकती इसलिए हम बेहोश हो जाते हैं, लेकिन हितकर तो है। एक गहरे अर्थों में अहितकर भी है क्योंकि फिर हमें स्मरण नहीं रह जाता कि पीछे क्या हुआ और करीब करीब हर जन्म में हम वही ना समझी दोहराये चले जाते हैं जो हमने पिछले जन्म में दोहरायी होगी। यदि याद आ जाय कि पिछले जन्म में हमने क्या किया तो शायद हम उन्हीं गहराइयों में दोबारा नहीं उतरेंगे जिनमें हम पिछले जन्म में उतरे थे। और अगर याद आ जाय कि हमने पिछले सारे जन्मों में क्या किया तो हम वही आदमी नहीं हो सकेंगे जो हम हैं। यह असंभव है कि हम वही आदमी हो सकें। क्योंकि हमने बहुत बार धन इकट्ठा किया है और हर बार मृत्यु ने सारे इकट्ठे धन को व्यर्थ कर दिया है तो शायद आज धन इकट्ठे करने की उतनी पागल दौड़ हमारे भीतर न रह जाय। हमने हर बार प्रेम किया है और सब प्रेम व्यर्थ हो गया है तो शायद प्रेम करने और प्रेम कराने की पागल दौड़ विलीन हो जाय। हमने हजार हजार बार महत्वाकांक्षायें की हैं, अहंकार किया है, यश पाये हैं, पद पाये हैं और सब व्यर्थ हो गये हैं। सब धूल में मिल गये हैं। अगर यह स्मरण में आ जाय तो शायद आज हमारी महत्वाकांक्षा एकदम क्षीण हो जाय। हम वही आदमी नहीं हो सकते हैं जो हम हैं। अहित यह हो जाता है कि हमें पिछले का कोई स्मरण नहीं रहता है इसलिए करीब करीब एक चक्कर में आदमी घूमता रहता है। उसे पता नहीं कि इस चक्कर से मैं बहुत बार गुजर चुका हूं और इस बार भी वह इसी आशा से गुजर रहा है जिस आशा से पहले वह बहुत बार गुजरा है। तब फिर मौत आकर सब आशाएँ व्यर्थ कर देती है फिर चक्कर शुरू हो जाता है, कोल्हू के बैल की तरह आदमी घूमता रहता है। अहित यह है। इस अहित से बचा जा सकता है लेकिन उसके लिए काफी जागरूकता और प्रयोग चाहिए। एकदम से मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि इतने बड़े आघात में, इतने बड़े आपरेशन में एकदम से नहीं जागा जा सकता है। हमें धीरे धीरे प्रयोग करने पड़ेंगे, धीरे धीरे छोटे दुखों पर प्रयोग करने पड़ेंगे कि हम छोटे दुखों में जाग सकें। सिर में दर्द है तभी जागरण मिट जाता है और ऐसा लगता है कि मुझे दर्द हो रहा है। ऐसा नहीं लगता कि सिर को दर्द हो रहा है। तो सिर के छोटे दर्द में प्रयोग करके सीखना पड़ेगा कि दर्द हो रहा है सिर को। मैं जान रहा हूं।

स्वामीराम अमरीका गये तो वहां के लोग उनकी बात समझने में बड़ी कठिनाई में पड़े शुरू शुरू में।

अमरीका का प्रेसिडेंट उनसे मिलने आया था तो वह भी बड़ी मुश्किल में पड़ा और उसने कहा, आप कैसी भाषा बोलते हैं ? क्योंकि राम थर्ड पर्सन में बोलते थे। वह ऐसा नहीं कहते थे कि मुझे भूख लगी है। वह कहते थे राम को भूख लगी है। ऐसा नहीं कहते थे कि मेरे सिर में दर्द हो रहा है। वह कहते थे राम के सिर में बहुत दर्द हो रहा है। तो पहले तो लोग बड़े मुश्किल में पड़े कि वह कह क्या रहे हैं। वह कहते थे कि रात राम को बड़ी सर्दी लगती रही तो कोई उनसे पूछता कि किसकी आप बात कर रहे हैं ? किसके संबंध में ? तो वह कहते कि राम के संबंध में। कौन राम ? तो कहते यह राम। इसको रात बड़ी सर्दी लगती रही और हम बड़े हंसते रहे कि देखो राम, कैसी सर्दी झेल रहे हो और वह कहते कि रास्ते पर राम जा रहे थे और कुछ लोग गालियां देने लगे तो हम खुद हंसने लगे कि देखो राम, कैसी गालियां पड़ीं। मान खोजने निकलोगे तो अपमान होगा ही। लोग कहते हैं कि आप बात किसकी कर रहे हैं, किसके संबंध में कह रहे हैं। कौन राम ? तो वे कहते यह राम।

छोटे छोटे जीवन के दुखों से प्रयोग करना पड़ेगा। जीवन में रोज छोटे दुख आते हैं। रोज प्रतिपल वे खड़े हैं और दुख ही क्यों, सुख से भी प्रयोग करना पड़ेगा क्योंकि दुख में जागना उतना कठिन नहीं है जितना सुख में जागना। यह अनुभव करना बहुत कठिन नहीं है कि सिर अलग है और उसमें दर्द हो रहा है लेकिन यह अनुभव करना और भी कठिन है कि शरीर अलग और स्वास्थ का जो रस आ रहा है वह भी अलग है। सुख में दूर होना और भी कठिन है क्योंकि सुख में हम पास होना चाहते हैं दुख में तो हम दूर होना ही चाहते हैं। यानी दुख में पक्का यह पता चल जाय कि दुख दूर है तो यह हमारी इच्छा भी है कि दुख हो, तो यह हमें पता चल जाय तो दुख से हमारा छुटकारा हो जाय। तो दुख में भी जागने के प्रयोग करने पड़ेंगे, सुख में भी जागने के प्रयोग करने पड़ेंगे और इन प्रयोगों में जो उतरता है वह कई बार स्वेच्छा से दुख वरण करके भी प्रयोग कर सकता है। सारी तपश्चर्या का मूल रहस्य इतना ही है। वह स्वेच्छा से दुख को वरण करके किया गया प्रयोग है। जैसे एक आदमी उपवास कर रहा है, भूखा खड़ा है, वह यह जानने की कोशिश कर रहा है, भूख के उस प्रयोग में आमतौर से जो उपवास कर रहे हैं उन्हें ख्याल नहीं है कि क्या कर रहे हैं वे। वे सिर्फ भूखे हैं और केवल खाना खाना है, उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं लेकिन उपवास का जो मौलिक प्रयोग है वह यह है कि भूख है और भूख मुझ से दूर है उसका अनुभव करना है। मैं भूखा नहीं हूं, तो भूख को अपने हाथ से पैदा करके यह जानने की भीतर चेष्टा चल रही है कि भूख कहां है। राम को भूख लगी है। मैं भूखा नहीं हूं। मैं जान रहा हूं कि भूख लगी है और इसे जानना है, जानना है और उस घड़ी पर पहुंच जाना है जहां भूखे और उसके बीच फासला हो, मैं भूखा न रह जाऊं। भूख में भी। शरीर भूखा रहे और मैं जानूं, मैं सिर्फ जानने वाला रह जाऊं तब तो उसका बड़ा गहरा अर्थ हो जाता है। उसका अर्थ सिर्फ भूखा रहना नहीं है। और आम तौर से जो आदमी उपवास करते हैं वह चौबीस घंटे यह दोहराते रहते हैं कि मैं भूखा हूं, आज खाना नहीं खाया है और कल खाना खाने की योजना में चित्त रमा रहता है और कल क्या खाना है उसकी भी योजना बनती रहती है। तब उपवास व्यर्थ हो गया, तब वह सिर्फ अनशन रहा। अनशन और उपवास का यही फर्क है। अनशन का मतलब है न खाना, उपवास का मतलब है और निकट, और निकट निवास करना। शरीर के फासले से स्वयं का निकट आना। उपवास का मतलब भी यही है। उपवास में कहीं भी भूखा रहने का कोई सवाल ही नहीं। उपवास का मतलब है आवास निकट। और निकट। किसके ? किसके पास ? अपने पास। अपने पास रहना और शरीर से दूर। तब फिर यह भी हो सकता है कि एक आदमी भोजन किये हुए उपवासा हो, क्योंकि अगर भोजन करते हुए भी वह जानता हो कि भोजन दूर हो रहा है और मैं कहीं और हूं तो उपवास है और यह भी हो सकता है कि एक आदमी भोजन न किया हुआ भी

उपवासा न हो क्योंकि वह जानता है कि मैं भूखा हूं। मैं भूखा मरा जा रहा हूं। उपवास तो एक मनोवैज्ञानिक बोध है भूख से भिन्नता का। तो ऐसे और दुख भी पैदा किये जा सकते हैं स्वेच्छा से भी, लेकिन स्वेच्छा से पैदा किया दुख बहुत गहरा प्रयोग है। एक आदमी कांटे पर भी लेट सकता है और सिर्फ यह जानने के लिए कि कांटे उसे नहीं चुभ रहे हैं, कांटे कहीं और छिदे हुए हैं और मैं कहीं और हूं। मैं कहीं और हूं, यह अनुभव करने के लिए भी दुख आमंत्रित किया जा सकता है। लेकिन अभी तो अनआमत्रित दुख हमेशा ही बहुत हैं। अभी उनसे ही प्रयोग शुरू करना चाहिए। दुख ऐसे ही चले आते हैं। आये हुए दुख में भी अगर यह बोध रखा जा सके कि मैं भिन्न हूं, मैं दूर हूं तो दुख साधना बन जाता है। आये सुख में भी साधना करनी पड़ेगी क्योंकि दुख में तो हो सकता है हम अपने को धोखा दे दें क्योंकि मन मानने का करता है कि दुख मैं नहीं हूं लेकिन सुख को तो मन मानने का करता है कि मैं सुख हूं। इसलिए सुख में साधना और मुश्किल हो जाती है असल में सुख से दूर अनुभव करना सबसे बड़ा दुख है। वहां तो मन होता है कि डूब जाओ पूरे और भूल जाओ कि मैं अलग हूं। सुख डुबाता है, दुख तो वैसे ही तोड़ता है और अलग करता है दुख के तो हम मजबूरी में ही साथ हैं, ऐसा मान पाते हैं लेकिन सुख को तो हम पूरे प्राणों से अंगीकार कर लेना चाहते हैं। आये हुए दुख में जागें, आए हुए सुख में जागें और कभी कभी प्रयोग के लिए आमंत्रित दुख में भी जागें क्योंकि आमंत्रित दुख में थोड़ा फर्क है। क्योंकि जिसे हम बुलाते हैं, जिसे हम न्योता देते हैं उसके साथ हम पूरी तरह कभी नहीं डूब सकते। क्योंकि वह बुलाया हुआ है, आमंत्रित है, यह बोध भी फासला पैदा करता है। अतिथि कभी भी हम नहीं हो सकते। घर में आया हुआ अतिथि हमसे अलग ही है। जब हम दुख को अतिथि की तरह बुला लेते हैं कभी तब वह अलग ही होता है क्योंकि हमने उसे बुलाया है। रास्ते में चलते वक्त कांटा लग गया है यह एक दुर्घटना है और दुख डुबा लेगा लेकिन आप कांटा लाये हैं और पैर में चुभाया है और जाना है प्रतिपल कि मैं कांटा चुभा रहा हूं और देख रहा हूं कि दुख कहां है। इस घटना में थोड़ा फर्क है। लेकिन नहीं कहता हूं कि आप अभी दुख आमंत्रित करने जायें, दुख वैसे बहुत हैं। उनको जियें और उनके बीच जागें और फिर सुख के लिए जियें और उसके बीच जागें तब कभी आपको लग सकता है कि कभी किसी दुख को भी बुलाकर देखें कि कितनी दूर हम खड़ा रह सकते हैं और ध्यान रहे, दुख को बुलाना एक बहुत महत्वपूर्ण प्रयोग है क्योंकि सुख को सब बुलाना चाहते हैं। दुख को कोई भी बुलाना नहीं चाहता। और मजे की बात यह है कि जिस दुख को हम नहीं बुलाना चाहते हैं वह आता है और सुख को हम बुलाते हैं वह आ ही नहीं पाता है। एक भी दुख आ जाता है तो द्वार के बाहर ही खड़ा रह जाता है। जिस सुख को हम बुलाते हैं वह कभी भी नहीं आता और जिस सुख को हम नहीं बुलाते हैं वह आ जाता है। तो दुख को बुलाने की कोई क्षमता जुटा लेता है तब उसका मतलब यह है कि वह इतना सुखी हो गया है कि अब दुख बुला सकता है। वह इतना आनंद में जी रहा है कि अब बुलाने में कोई भी कठिनाई नहीं है। अब दुख को कहा जा सकता है कि आओ और ठहर जाओ। तब वह गहरे प्रयोग की बात है। उसके पहले जो दुख आ रहे हैं उनमें ही जागने का प्रयोग करना चाहिए और अगर दुखों के प्रति हम जागते चले जायें तो वह क्षमता आ जायेगी मृत्यु के क्षण तक तो हम मृत्यु में भी जाग सकेंगे और प्रकृति भी हमें छूट दे देगी कि जागे रहें क्योंकि प्रकृति ने भी अनुभव कर लिया है कि यह व्यक्ति दुखों में जाग सकता है, इसी से मृत्यु में भी जाग सकता है लेकिन अनायास मृत्यु में कोई भी नहीं जाग सकता है।

अभी एक आदमी मरा पी० डी० आस्पेंस्की। वह रूस का एक बड़ा वैज्ञानिक था। मृत्यु के संबंध में इस सदी में सबसे ज्यादा प्रयोग उसी आदमी ने किया। मरने के समय जबकि वह बुरी तरह से बीमार है और चिकित्सकों ने कहा है वह बिस्तर से न उठे तब वह तीन महीने तक इतना श्रम उसने किया है जो अकल्पनीय है।

रात रात भर सोता नहीं है, सफर करता है, चलता रहता है, दौड़ता रहता है, भागता रहता है और चिकित्सक हैरान हैं। वह कहते हैं, उसे पूर्ण आराम करना चाहिए। उसने अपने सारे निकट मित्रों को बुला लिया है और उसने अपनी बातचीत बन्द कर दी है लेकिन वह श्रम में लगा हुआ है और जो मित्र उसके साथ मरते समय तीन महीने रहे उनका कहना यह है कि हमने अपनी आंखों के सामने पहली दफे मृत्यु में जागे हुए किसी आदमी को लेटे हुए देखा और जब उससे उन्होंने कहा कि चिकित्सक कहते हैं कि तुम आराम करो तो तुम आराम क्यों नहीं करते ? तो उसने कहा, कि मैं सारे दुख देख लेना चाहता हूं। कहीं ऐसा न हो जाय कि मरते वक्त दुख इतना बड़ा हो कि मैं सो जाऊं, बेहोश हो जाऊं। तो मैं उसके पहले वह सब दुख देख लेना चाहता हूं जो कि वह क्षमता पैदा कर दे, वह ऊर्जा दे दे कि मृत्यु के समय बेहोश में न मर जाऊं। सब तरह के दुख उसने तीन महीने झेलने की कोशिश की। उसके मित्रों ने लिखा है कि हम जो पूर्ण स्वस्थ थे, उसके साथ थक जाते थे लेकिन उसे थकते नहीं देखा और चिकित्सक कह रहे हैं कि उसको बिल्कुल ही विश्राम करना चाहिए नहीं तो बहुत नुकसान हो जायेगा। रात जिस वक्त वह मरा है पूरी रात टहलता रहा है। एक पैर उठाने की उसकी ताकत नहीं है। डाक्टर उसकी जांच करके कहते हैं कि एक पैर उठाने की ताकत तुममें नहीं है लेकिन वह रात भर चलता रहा है। वह कहता है कि मैं चलते ही चलते मरना चाहता हूं। कहीं बैठे हुए मरूं और बेहोश न हो जाऊं, कहीं सोया हुआ मरूं और बेहोश न हो जाऊं और चलते चलते उसने खबर दी है मित्रों को कि बस इतनी देर और। और यह दस कदम मैं और उठा पाऊंगा बस, डूबा जा रहा है सब लेकिन आखिरी कदम भी मैं उठाउंगा क्योंकि मैं आखिरी क्षण तक कुछ करते रहना चाहता हूं ताकि मैं पूरा जागा रहूं। ऐसा न हो कि मैं विश्राम में सो जाऊं। वह आखिरी कदम चलते में ही मरा है। कम ही लोग चलते हुए मरे जमीन पर। वह चलता ही हुआ गिरा है यानी वह गिरा ही तब है जब मौत आ गयी और आखिरी कदम पर उसने कहा है बस यह आखिरी कदम है। अब मैं गिर जाऊंगा, लेकिन मैं तुम्हें कहके जाता हूं कि शरीर छूट गया है बहुत पहले। अब तुम देखोगे कि शरीर छूट गया है लेकिन मैं बहुत देर से देख रहा हूं कि शरीर छूट गया है और मैं हूं। सम्बन्ध टूट गया है और मैं जीता हूं इसलिए अब शरीर ही गिरेगा, उसके न गिरने का कोई उपाय नहीं और मरते क्षण में उसकी आंखों में जो चमक, जो शांति, जो आनंद उसमें, जो दूसरी दुनिया के द्वार पर खड़े हो जाने का प्रकाश है वह उसके मित्रों ने अनुभव किया है, लेकिन इसकी तैयारी करनी पड़ेगी और इसकी निरंतर तैयारी करनी पड़ेगी और अगर यह तैयारी पूरी हो जाती है तो मृत्यु की घटना अद्भुत घटना है उससे कीमती कोई घटना नहीं है, क्योंकि उसमें जो हम जान सकते हैं कहीं और नहीं जान सकते। तब मृत्यु मित्र मालूम पड़ने लगती है क्योंकि मृत्यु की घटना में ही जीवन है। उसका अनुभव हो सकता है, उसके पहले नहीं हो सकता है। याद रहे, जितनी घनी अंधेरी रात हो, तारे उतने ही चमकते दिखायी पड़ते हैं और जितने काले बादल हों, बिजली की चमक चांदी बन जाती है। जब मृत्यु चारों तरफ पूरी खड़ी हो जाती है तब वह जीवन का जो बिन्दु है वह पूरा चमक में प्रगट होता है, उसके पहले कभी प्रगट नहीं होता। मृत्यु अंधेरा बन जाती है चारों तरफ और बीच में वह जो जीवन का बिन्दु है, जिसे हम आत्मा कहें, वह पूरे प्रकाश में चमक उठता है। चारों तरफ घिरा अंधेरा है उसके चमकाने का काम करता है लेकिन हम उस वक्त बेहोश हो जाते हैं। आत्मा को जानने का जो क्षण हो सकता था मृत्यु, उस वक्त हम बेहोश हो जाते हैं। इसकी तैयारी करनी पड़ेगी। ध्यान इसकी तैयारी है। ध्यान धीरे धीरे कैसे मरा जाता है स्वेच्छा से उसका प्रयोग है। कैसे हम भीतर सरकते हैं और कैसे हम शरीर को छोड़ कर चले जाते हैं उसका प्रयोग है और ध्यान की तैयारी चले और चलती रहे तो मृत्यु के क्षण में पूर्ण ध्यान उपलब्ध हो जायगा। और यह जो मृत्यु होगी जागे हुए, ऐसे व्यक्ति की आत्मा

फिर जागी हुई ही जन्म लेती है और तब उसका पहला दिन जन्म के बाद का अज्ञान का नहीं होता, तब ज्ञान का ही हो जाता है। तब प्रतिपल गर्भ में भी वह पूरे होश से भरा हुआ है और एक बार जो जागकर मरा है उसका फिर एक ही जन्म हो सकता है। जाग के मरे हुए व्यक्ति का एक ही जन्म और होता है फिर दोबारा कोई जन्म नहीं हो सकता। क्योंकि जिसे इतना अनुभव हो गया है, मृत्यु क्या है, जन्म क्या है और जीवन क्या है उसको परमगति उपलब्ध हो जाती है। यह जो जन्म है जागे हुए व्यक्ति का, ऐसे ही व्यक्ति को हम अवतार, तीर्थंकर, बुद्ध, जीसस और कृष्ण कहते रहे हैं। ऐसे लोगों को हम आदमी से अलग गिनते रहे हैं। उसका कोई कारण नहीं है, उसका कुल कारण इतना ही है कि वह निश्चित हमसे बहुत अलग हैं। फर्क इतना ही है कि हम सोये हुए हैं और वे जागे हुए हैं। और यह उनकी अंतिम यात्रा है इस पृथ्वी पर और इसलिए कुछ उनमें है जो हममें नहीं है और कुछ उनमें है जो हम तक पहुंचाने की वे अधिक चेष्टा करते रहे हैं। फर्क हममें उनमें इतना ही है कि उनकी यह मृत्यु और यह जन्म पहला जाग्रत हुआ है इसलिए पूरा जीवन जागा हुआ है।

तिब्बत में वार्गो एक छोटा सा ध्यान का प्रयोग है। कीमती प्रयोग है। वह मरते क्षण ही करवाया जाता है। जब कोई मर रहा होता है तब चारों तरफ उनके जो जानते हैं, वह इकट्ठे होकर वार्गो करवाते हैं। लेकिन वार्गो उसको ही करवाया जा सकता है जिसने जीवन में ध्यान किया हो। जिसने ध्यान नहीं किया हो उससे वार्गो नहीं करवाया जा सकता है। जैसे ही कोई व्यक्ति मरता है तो वार्गो के प्रयोग में उसे जागने के लिए बाहर से सूचनाएं दी जाती हैं कि वह जागा रहे और उसे यह सब पता चल जाता है कि अब क्या क्या होगा वह देखता रहे। क्योंकि बहुत बार ऐसी घटनाएं घटती हैं जिन्हें वह समझ ही नहीं सकता। नयी घटनाओं को एकदम से समझा भी नहीं जा सकता है। मरने के बाद अगर कोई आदमी जागा रहे तो पहले तो बहुत देर तक उसे पता ही नहीं चलेगा कि वह मर गया है। उसे पता तब चलेगा जब उसकी लाश लोग उठाने लगेंगे और उसको मरघट पर जलाने लगेंगे तब उसे पक्का पता चलेगा। क्योंकि भीतर तो कुछ मरता ही नहीं, सिर्फ एक फासला हो जाता है लेकिन फासला का जिन्दगी में कभी अनुभव नहीं किया। वह अनुभव इतना नया है कि उसको समझने की कोई पुरानी परिभाषा नहीं है उसके पास। तो उसे सिर्फ इतना ही लगता है कि कुछ अलग अलग हो गया है। लेकिन कुछ मर गया है उसकी समझ में तभी आता है जब चारों तरफ लोग रोने चिल्लाने लगते हैं, उसकी लाश के आस पास गिरने लगते हैं, और उसको उठाकर ले जाते हैं। लाश को जल्दी मरघट पहुंचा देने का कारण है। लाश को जितना जल्दी हो सके दफना देने का, आग लगा देने का कारण है। उतना ही जल्दी उस आदमी को पक्का पता चल जाता है कि शरीर गया। लेकिन अगर आदमी मूर्च्छित है तो यह भी उसे पता नहीं चल पाता है। होश में आ जाय तो ही पता चल पाता है। इसके लिए वार्गो में सुझाव देते हैं कि अपने शरीर को ठीक से जलते हुए देख लेना, भाग मत जाना, जल्दी हट मत जाना। मरघट पर और लोग भी तुम्हें पहुंचाने न जायें, तुम भी वहां मौजूद रहना, अपने शरीर को ठीक से जलते हुए देख लेना ताकि अगली बार यह शरीर का मोह पकड़े न। क्योंकि जो जलता हुए देख लिया गया हो, उसका मोह विलीन हो जाता है लेकिन दूसरे लोग तो देख ही लेंगे जलते हुए। वह आदमी नहीं देख रहा है। आम तौर से ९९९ मौकों पर वह बेहोश होता है। और अगर वह एक मौके पर कभी होश में होता है तो अपने जलते हुए शरीर को देखकर भाग जाता है, मरघट पर नहीं पहुंचता है जहां सब जाते हैं। वार्गो में उससे कहते हैं, देख इस मौके को मत छोड़ देना। अपने शरीर को जलते हुए देखना। उसे जलते हुए देख ही लेना जो ऐसा समझता था कि मैं हूं उसे मिटते हुए पूरी तरह देख लेना, उसको भस्मीभूत होते हुए, राख में विलीन होते हुए देख ही लेना ताकि अगले जन्म में तुझे ख्याल रहे कि तू कौन हो।

जैसे ही व्यक्ति मरता है वैसे ही एक नये लोक में उसका पदार्पण होता है जिसका हमें कोई अनुभव नहीं

होता । वह लोक हमें इतना घबरा भी सकता है, भयभीत भी हो सकता है, वह लोक हमारे किसी भी अनुकूल प्रतिकूल नहीं है, उससे हमारा कोई संबंध भी नहीं है। जैसे कि हम एक व्यक्ति को बिल्कुल ही अनजान देश में प्रवेश करवा लें जहाँ कि वह भाषा नहीं जानता है, जहां लोगों के ढंग नहीं जानता है तो जैसा घबरा जाय, उससे भी बड़ी घबराहट है क्योंकि चाहे कैसा भी मनुष्य हो, कैसी भी भाषा बोलता हो, कैसे भी ढंग हों उसके जीने के, फिर भी वह मनुष्य है और हमारे और उसके बीच एक सम्बन्ध है। हम जिस दुनिया में रह रहे हैं वह शरीर की दुनिया है। उसके छूटते ही अशरीर की दुनिया शुरू हो जाती है और अशरीरी प्राणों का अनुभव हमें बिल्कुल नहीं है। उस अशरीरी जीवन के अशरीरी योनि में प्रवेश करते ही हम इतने भयभीत और डरे हुए हो सकते हैं जिसका कोई हिसाब न रहे। आमतौर से तो हम बेहोश हो जाते हैं इसलिए कोई पता नहीं रहता है लेकिन होश में जो जाता है वह बहुत मुश्किल में पड़ जाता है। वार्गो में उसे समझाने की कोशिश करते हैं कि क्या क्या होगा, कैसा जगत होगा, कैसे व्यक्तित्व होंगे, तुम कहां प्रवेश कर गये हो। लेकिन यह प्रयोग उनको ही करवाया जा सकता है जो ध्यान के गहरे प्रयोग से गुजरते रहे हों अन्यथा नहीं करवाया जा सकता है। इधर मैं निरंतर सोचता हूं कि जो मित्र ध्यान के प्रयोग से गुजर रहे हैं उन्हें किसी न किसी रूप में वार्गो का प्रयोग करवाया जा सके लेकिन वह तभी करवाया जा सकता है जब वह ध्यान में गहरे चले जायें अन्यथा वह सुन भी न पायेंगे कि क्या कहा जा रहा है। उन्हें कौन सी बात बताई जा रही है उनके ख्याल में भी नहीं आयेगी। उसके लिए अत्यन्त शून्य और शांत चित्त होना जरूरी है तभी वे बातें ख्याल में आ सकती हैं और अगर चेतना डूबती चली जाती है, विलीन होती चली जाती है, इस जगत से सम्बन्ध टूटने लगते हैं तो इस जगत से दिये गये कोई भी संदेश अत्यन्त शांत मन से ही सुने जा सकते हैं अन्यथा नहीं सुने जा सकते। और यह ध्यान रहे, मृत्यु के साथ हम कुछ कर सकते हैं, जन्म के साथ कुछ भी नहीं कर सकते। लेकिन मृत्यु के साथ जो हमने किया वह हमारे जन्म के साथ भी हो ही जाता है। जैसे हम मरते हैं वैसे ही हम जन्मते हैं। जागा हुआ व्यक्ति अपने गर्भ के चुनाव में भी मुक्त हो जाता है। यानी वह अन्धे की तरह कुछ भी नहीं चुन लेता है। जागा हुआ व्यक्ति अपने मां और पिता का वैसे ही चुनाव करता है जैसे कि कोई समृद्ध व्यक्ति अपने रहने के मकान का चुनाव करता है लेकिन गरीब आदमी अपने रहने के मकान का चुनाव नहीं कर पाता है। चुनाव करने के लिए सामर्थ्य चाहिए। मकान खरीदने की सामर्थ्य चाहिए। गरीब आदमी अपने मकान का चुनाव नहीं करता। कहना चाहिए मकान ही गरीब आदमी को चुनता है। गरीब मकान गरीब आदमी को चुन लेता है। अमीर आदमी अपने मकान का निर्णय कर लेता है कि मैं कहां हूं, कैसा बगीचा, द्वार कहां हो, दरवाजा कहां हो, सूरज पूरब से निकले कि पश्चिम से, हवाएँ कितनी आये, कितना खुला हो वह सब चुनाव करता है। जाग्रत व्यक्ति अपने गर्भ का चुनाव करता है। महावीर या बुद्ध जैसे व्यक्ति हर कहीं पैदा नहीं होते हैं। वे सारी संभावनाओं को देखकर ही पैदा होते हैं। कैसा शरीर मिलेगा, कैसी माँ मिलेगी, कैसा बाप मिलेगा। कैसी शक्ति मिलेगी, कैसा सामर्थ्य मिलेगा, कैसी सुविधा मिलेगी। क्या मिलेगा वह सब देखकर पैदा होते हैं। उनके सामने चुनाव स्पष्ट है कि किसको चुनें, कहां जायें और इसलिए उनका जीवन पहले दिन से अपना चुना हुआ जीवन होता है। अपना चुना हुआ जीवन का आनन्द ही दूसरा है क्योंकि वहां से स्वतंत्रता का प्रारंभ है और मिले जीवन का वह आनंद कभी भी नहीं हो सकता है क्योंकि वह परतंत्रता है। हम ढकेल दिये गये हैं, एक धक्का दे दिया गया है और जो भी हो गया है, वह हो गया है। उसमें हमारा कोई भी हाथ नहीं है।

यह जो जागरण संभव हो सके तो चुनाव बिल्कुल ही किया जा सकता है और अगर जन्म ही हमारा चुनाव हो तो पूरा जीवन हमारा चुनाव हो जाता है, तब हम एक मुक्त, जीवन मुक्त की तरह जीते हैं। जिस व्यक्ति की मृत्यु जागे हुए होती है उसका जन्म जागा हुआ होता है और फिर उसका जीवन मुक्त होगा। जीवन मुक्त शब्द को

हम जानते हैं बार बार लेकिन हमें ख्याल में नहीं होगा कि जीवन मुक्त का क्या अर्थ है। जीवन मुक्त का अर्थ है, जिसका जन्म जागा हुआ हो। वही जीवन मुक्त हो सकता है अन्यथा मुक्ति की चेष्टा कर सकता है, अगला जीवन उसका मुक्त हो सकता है। लेकिन यह जीवन मुक्त नहीं हो पायेगा। इस जीवन के मुक्त होने के लिये पहले दिन से अपनी स्वतंत्रता का चुनाव होना चाहिए और वह हम तभी कर सकते हैं जब हम पिछली मृत्यु के जागरण का उपाय किये हुए हों। अब वह तो सवाल न रहा। यह जीवन हमारे पास है। अभी मृत्यु नहीं आयेगी, आना सुनिश्चित है। मृत्यु से ज्यादा सुनिश्चित कुछ भी नहीं है। सब सम्बन्ध में संदेह हो सकता है, मृत्यु के सम्बन्ध में कुछ भी संदेह नहीं है। परमात्मा के सम्बन्ध में संदेह करनेवाले लोग हैं, आत्मा के सम्बन्ध में संदेह करने वाले लोग हैं लेकिन ऐसा आदमी आपने नहीं सुना होगा जो मृत्यु के संबंध में संदेह करता हो। वह असंदिग्ध है। वह आयेगी, आती ही रही है, उसका आना हो ही रहा है, प्रतिपल निकट होती चली जा रही है। यह जो क्षण हमारे और इसके बीच में बचे हैं, इनका हम जागने के लिए उपयोग कर सकते हैं। ध्यान इसकी ही प्रक्रिया है, वह इन तीन दिनों में मैं कोशिश करूंगा कि आपके ख्याल में आ जाय कि ध्यान उसकी ही प्रक्रिया है।

एक मित्र ने पूछा है कि ध्यान की विधि और जाति संस्मरण से क्या सम्बन्ध है ?

जाति स्मरण से अर्थ है पिछले जन्मों के स्मरण की विधि। पहले जो हमारा होना हुआ है उसके स्मरण की विधि। ध्यान का ही एक रूप जाति स्मरण, ध्यान का ही एक प्रयोग है। जैसे नदी है और कोई पूछे कि नहर क्या है ? हम कहेंगे कि नदी का ही एक विशेष प्रयोग है सुनियोजित। नदी का प्रयोग, पर नियंत्रित, व्यवस्थित। नदी है अव्यवस्थित, अनियंत्रित। नदी भी पहुंचेगी कहीं लेकिन पहुंचने की मंजिल का कोई पक्का नहीं। लेकिन नहर सुनिश्चित है कि कहां पहुंचेगी। ध्यान तो बड़ी नदी है। सागर तक पहुंच ही जायेगी। परमात्मा तक पहुंचा ही देगा ध्यान लेकिन ध्यान के और अवांतर प्रयोग भी हैं ध्यान को छोटी छोटी शाखाओं को नियोजित करके नहर की तरह भी पहुंचाया जा सकता है। जाति स्मरण उनमें एक है। ध्यान की शक्ति को हम पिछले जन्मों की तरफ भी प्रवाहित कर सकते हैं। ध्यान का तो मतलब है सिर्फ अटेन्शन, ध्यान का मतलब है ध्यान। किस चीज पर ध्यान देते हैं। उसके बहुत प्रयोग हो सकते हैं। उसका एक प्रयोग जाति स्मरण है कि मेरे पिछले जन्मों की स्मृति कहीं पड़ी है।

स्मृतियाँ मिटती नहीं, ध्यान रहे। सिर्फ स्मृति दबती है या उभरती है। दबी हुई स्मृति मिटी हुई मालूम पड़ती है। अगर मैं आपसे पूछूं कि १९५० में १ जनवरी को आपने क्या किया था तो ऐसा तो नहीं है कि आपने कुछ भी न किया होगा लेकिन बता आप कुछ भी नहीं पायेंगे कि १ जनवरी १९५० को क्या क्या किया। एकदम खाली हो गया है १ जनवरी १९५० का दिन। खाली न रहा होगा। जिस दिन बीता होगा उस दिन भरा हुआ था लेकिन आज खाली हो गया है। आज का दिन भी कल इसी तरह खाली हो जायगा। दस साल बाद आज के दिन का कोई पता नहीं चलेगा। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि १ जनवरी १९५० नहीं था। न इसका यह मतलब है कि १ जनवरी १९५० को आप नहीं थे, न इसका यह मतलब है कि चूंकि आपको स्मरण नहीं हो पाता है इसलिए उस दिन को हम कैसे मानें। वह था और उसे जानने का उपाय है। ध्यान को उसके तरफ भी ले जाया जा सकता है और जैसे ही ध्यान का प्रकाश उस पर पड़ेगा आप हैरान हो जायेंगे। वह उतना ही जीवंत वापस दिखायी पड़ने लगेगा जितना जीवंत उस दिन भी न रहा होगा। जैसे कि कोई टार्च को लेकर अंधेरे कमरे में आये और घुमाये। वह बाईं तरफ देखे तो दाईं तरफ अंधेरा हो जायगा लेकिन बाईं तरफ मिट नहीं जाता। वह टार्च को घुमाये और दाईं तरफ ले आये तो दाईं तरफ फिर जीवित हो जायगा लेकिन बाईं तरफ छिप जाता है। ध्यान का एक फोकस है और अगर विशेष दिशा में प्रवा-

हित करना हो तो टार्च की तरह प्रयोग करना पड़ता है ध्यान का और अगर परमात्मा की तरफ ले जाना पड़ता हो तो दिये की तरह ले जाना पडता है, इसको ठीक से समझ लें। दिये का कोई फोकस नहीं होता, दिया अनफोकस्ड है और दिया सिर्फ जलता है। चारों तरफ रोशनी उसकी फैल जाती है। रोशनी किसी दिशा में नहीं बहती है, बस बहती है चारों तरफ। दिये का कोई मोह नहीं कि यहां बहे वहाँ बहे, यहाँ जाये, वहां जाये। इसलिए जो भी है वह दिये की रोशनी में प्रगट हो जाता है लेकिन टार्च दिये का फोकस रूप में प्रयोग है। सारी तरफ रोशनी को बांधकर एक तरफ बहा दे। इसलिए यह हो सकता है कि दिया के कमरे में जलने से चीज साफ दिखायी न पड़े। साफ दिखायी पड़ने के लिए हमें दिये की रोशनी को एक ही जगह बांधकर रखनी पड़ती है। वह टार्च हो जाती है। तब फिर एक चीज पूरी तरह साफ दिखायी पड़ती है। लेकिन एक चीज पूरी साफ दिखायी पड़ जाती है तो शेष चीज दिखायी पड़नी बन्द हो जाती हैं। असल में एक चीज को साफ देखना हो तो सारे ध्यान को एक दिशा में बहाना पड़ेगा, शेष सब तरफ अंधेरा कर लेना पड़ेगा। तो जिसे सीधे जीवन के सत्य को ही जानना है वह तो दिये की तरह ध्यान में विकास करेगा। लेकिन अगर कोई विशेष प्रयोग करने हों, जैसे पिछले जन्मों के संस्मरण का तो फिर ध्यान को एक दिशा में प्रवाहित करना होगा और उस दिशा में प्रवाहित करने के दो तीन सूत्र आपसे कहता हूं। पूरा सूत्र नहीं कहता हूं क्योंकि शायद ही किसी को प्रवाहित करने का ख्याल हो। जिनको ख्याल हो वह मुझसे अलग से मिल ले सकते हैं। लेकिन दो तीन सूत्र कहता हूं समझ में भर बात आ जाय। इतने से आप प्रयोग न कर सकेंगे लेकिन बात भर समझ सकेंगे और सबके लिए प्रयोग करना शायद उचित भी नहीं है इसलिए पूरी बात नहीं कहूंगा। क्योंकि कई बार प्रयोग खतरे में उतार दे सकता है।

एक घटना आपसे मैं कहूं उससे ख्याल आ जायगा। एक प्रोफेसर महिला दो तीन वर्ष तक ध्यान के संबंध में मेरे निकट रहीं। उनका अति आग्रह था कि जाति स्मरण करना, पिछला जन्म जानना। तो उसे मैं जाति स्मरण के प्रयोग कराया। बहुत कहा कि यह प्रयोग अभी मत करो तो अच्छा है क्योंकि ध्यान पूरा विकसित हो जाय तब तो जाति स्मरण के प्रयोग से कोई खतरा नहीं होता है लेकिन पूरा विकसित न हो तो खतरे हो सकते हैं क्योंकि एक ही जन्म की स्मृतियां झेलना भी बहुत बोझिल है। दो चार जन्म की स्मृतियां एकदम से द्वार तोड़ के भीतर आजायें तो आदमी पागल भी हो सकता है और इसलिए प्रकृति ने व्यवस्था की है कि आप भूलते चले जायें। जानने से ज्यादा भूलने की व्यवस्था की है। जितना आप स्मरण करते हैं उससे ज्यादा विस्मरण करवा दिया जाता है ताकि आपके चित्त पर ज्यादा बोझ कहीं न हो जाय, चित्त की सामर्थ्य बढ़ जाय तो ज्यादा बोझ झेला जा सकता है लेकिन सामर्थ्य न बढ़े और बोझ आ जाय तो कठिनाई शुरू हो जाती है। पर उनका आग्रह था, वह नहीं मानी और उन्होंने प्रयोग किये। जिस दिन उनकी पहले जन्म की स्मृति की धारा टूटी उस दिन रात के कोई दो बजे वह भागी हुई मेरे पास आयी, एकदम हालत उनकी खराब थी। बहुत ही मुश्किल में पड़ गयी। उन्होंने कहा, मुझे अब बिल्कुल किसी तरह इसको बन्द हो जाना चाहिए, मैं कुछ उधर देखना ही नहीं चाहती। लेकिन इतना आसान नहीं है कुछ। नहर को बुला लेना और एकदम से बन्द कर देना इतना आसान नहीं है। द्वार टूट जाय तो उसे एकदम बन्द कर देना बहुत मुश्किल है क्योंकि द्वार खुलता नहीं है टूटता है। वक्त बढ़ा दस पन्द्रह दिन तभी वह स्मृतियों की धारा बन्द हो सकी। कठिनाई क्या हुई? उन देवी को अत्यंत पवित्र, चरित्रवान होने का ख्याल था और पिछले जन्म की स्मृति आयी कि वह वेश्या थी और जब वेश्या होने के सारे चित्र उभरने शुरू हुए तो उनके प्राण कंप गये और इस जीवन की सारी नैतिकता सब डांवाडोल हो गयी और वह स्मृति ऐसी नहीं आती

कि काई और वेश्या था। यही जो अब चरित्रवान है और अक्सर ऐसा होता है कि पिछले जन्म में जो वेश्या हो वह इस जन्म में सती हो जाय, वह पिछले जन्म की प्रतिक्रिया है, पिछले जन्म का दुख भाव है पिछले जन्म की पीड़ा दायक स्मृति है जो उसे सती बना सकी। इसलिए अक्सर ऐसा हो जाता है। पिछले जन्म के गुंडे इस जन्म में महात्मा हो जाते हैं, इस जन्म के महात्मा अगले जन्म में गुंडे हो जाते हैं इसलिए महात्माओं और गुंडों में बड़ा गहरा संबंध है। अक्सर यह प्रतिक्रिया हो जाती है। कारण यह है कि जो हम जान लेते हैं उससे हम पीड़ित हो जाते हैं, उससे हम विपरीत चले जाते हैं। चित्त का जो पेंडुलम है वह बहुत विपरीत घूमता रहता है। बायें को छू लेता है फिर दायें की तरफ जाना शुरू हो जाता है। दायें से छू नहीं पाता है कि फिर बायें को जाना शुरू हो जाता है। जब घड़ी के पेंडुलम को आप बायें तरफ जाते देखें तो आप समझ लेना कि वह दायीं तरफ जाने की तैयारी कर रहा है। दायीं तरफ जब वह जा रहा है तब वह बायीं तरफ जाने की शक्ति जुटा रहा है और जितने दूर तक बायें जायेगा उतने ही दूर तक दायें जायेगा। इसलिए जीवन में अक्सर ऐसा होता रहता है। बुरा अच्छा बन जाता है, अच्छा बुरा बन जाता है। प्रत्येक जीवन में यह डांवा डोलपन होता रहता है इसलिए आमतौर से ऐसा मत सोचना कि जो आदमी इस जन्म में महात्मा बन गया है वह पिछले जन्म में भी महात्मा रहा होगा। जीवन उससे उल्टा कहीं जा रहा है। पिछले जन्म में जो उसने जाना है उसकी पीड़ा ने उसको भर दिया है।

मैंने सुना है एक पड़ोस में एक साधु है और सामने एक वेश्या है। वे दोनों मरे हैं एक ही दिन। वेश्या स्वर्ग की तरफ जा रही है और साधु नर्क की तरफ जा रहा है और वह जो उसे लेने आये हैं यमदूत आपस में पूछते हैं कि क्या गड़बड़ हो गयी है, कुछ भूल तो नहीं हो गयी क्योंकि इस साधु को हम नर्क क्यों ले जा रहे हैं ? यह साधु है। तो उनको जो जानता है वह कहता है कि वह साधु जरूर था लेकिन वेश्या के प्रति निरंतर ईर्ष्या से भरा था और निरंतर यह सोचता था कि पता नहीं कौन सा राग रंग वहां चल रहा है, कौन सा सुख वहां मिल रहा है। वेश्या के घर से आते हुए वीणा के स्वर उसके प्राणों को बहुत कंपा देते थे और घूंघर की आवाज उसे इतना आंदोलित कर देती थी जितना वेश्या के सामने बैठे हुए लोग आंदोलित नहीं होते थे और उसका चित्त वहीं लगा रहता था, वह भगवान की पूजा करता था क्योंकि हाथ वेश्या की तरफ जोड़े रहता था। और वह वेश्या निरंतर सोचती थी कि साधु न मालूम किस आंतरिक आनंद में डूबा है, मैं कितने गर्त में पड़ गयी हूं और जब वह साधु को पूजा का फूल लिए हुए जाते देखती थी तो सोचती थी कि कब ऐसा संभव होगा कि मैं भी प्रभु के मंदिर में पूजा के फूल ले जाने के योग्य हो जाऊं। लेकिन मैं तो इतनी अपवित्र हूं कि मंदिर में जाने का साहस नहीं जुटा पाती और जब साधु के घर से पूजा का धुआं उठता था और दीप जलते थे और पूजा की घंटियां गूंजती थीं तो वेश्या किसी ध्यान में खो जाती थी जितनी की साधु नहीं खो पाता था। और ऐसा उल्टा होता रहा है और वेश्या ने निरंतर अर्जन कर लिया था साधु होने का और साधु ने अर्जन कर लिया था वेश्या होने का। उनकी यात्रा जो बिल्कुल विपरीत थी, विपरीत हो गयी थी, जो बिल्कुल उल्टी मालूम होती थी वह बिल्कुल बदल गयी थी। अक्सर ऐसा होता है। इसके होने के नियम हैं। उन देवी को जब स्मरण आया तो उन्हें बहुत पीड़ा हुई। पीड़ा यह हुई कि उनका सारा अहंकार गिर गया और टूट गया। जो उन्होंने जाना वह कंपा देने वाला सिद्ध हुआ, उसे भुला देना चाहती हैं। मैंने उनको कहा था कि इसे याद करने की तैयारी रखनी चाहिए। अगर तैयारी न हो तो याद नहीं करना चाहिए। इसलिए मैं आपको दो तीन सूत्र कहता हूं जिनसे जाति स्मरण का अर्थ समझ सकें लेकिन उसमें प्रयोग नहीं हो सकेगा। जिन्हें करना होगा उन्हें अलग से ही सोचना पड़ेगा।

पहली तो बात यह है कि अगर जाति स्मरण में उतरना है, अतीत जन्म को जानना हो तो पहली बात

जरूरी है भविष्य की तरफ से चित्त को तोड़ना पड़ता है। हमारा चित्त भविष्य का नहीं है। हमारा चित्त जो है वह फ्यूचर सेंटर्ड है आमतौर से, अतीतगामी नहीं है। चित्त आम तौर से भविष्य की तरफ गति करता है। चित्त की जो धारा है वह भविष्य की तरफ उन्मुख है और जीवन के हित में यही है कि भविष्य की तरफ चित्त उन्मुख हो, अतीत की तरफ उन्मुख न हो क्योंकि अतीत से अब क्या लेना देना है, वह गया। अभी जो आने को है उसकी तरफ हम उत्सुक हों। इसलिए तो हम ज्योतिषियों के पास पूछते हैं कि कल क्या होने वाला है। भविष्य के प्रति हम उत्सुक हैं कि कल क्या होने वाला है। अब जिस व्यक्ति को अतीत स्मरण करना हो उसे भविष्य की उत्सुकता बिल्कुल छोड़ देनी पड़ती है क्योंकि चित्त का जो फोकस है उसकी जो धारा है जब भविष्य की तरफ बह रही हो, उसके टार्च की धारा तो अतीत की तरफ नहीं बह सकती। तो पहला तो काम यह करना पड़ता है कि भविष्योन्मुखता बिल्कुल तोड़ देनी पड़ती है कुछ महीने के लिए, एक निश्चित समय के लिए, ६ महीने के लिए भविष्य को नहीं सोचूंगा। भविष्य का ख्याल आ जाएगा तो उसको नमस्कार कर लूंगा। भविष्य का भाव आ जायेगा तो मैं उस पर नहीं बहूंगा और अब पीछे की तरफ बहूंगा, पहली बात। और जैसे भविष्य टूटता है, चित्त की धारा पीछे की तरफ होनी शुरू हो जाती है। पहले तो इसी जन्म में पीछे लौटना पड़ेगा, एकदम पिछले जन्म में नहीं लौटा जा सकता है। तो उसके प्रयोग हैं कि हम इस जन्म में पीछे की तरफ कैसे लौटें। जैसे कि मैंने कहा, १ जनवरी १९५० को आपने क्या किया? इसका आपको कोई पता नहीं। तो इसका प्रयोग है, इसे जाना जा सकता है। जैसे मैं ध्यान के लिए कहता हूं, ऐसा ध्यान करें और दस मिनट के बाद ध्यान में जब चित्त चला जाय, शरीर शिथिल हो जाय, श्वांस शिथिल हो जाय तब एक ही बात चित्त में रह जायगी कि १ जनवरी ५० को क्या हुआ। सारा चित्त इस पर घूमने लगेगा। आप दो चार दिन में पायेंगे अचानक एक दिन जैसे पर्दा उठ गया और एक जनवरी आ गयी और सुबह से साँझ तक एक एक चीज दौड़ रही है और आपने इस तरह एक जनवरी देखी जैसे आपने उस दिन भी न देखी होगी क्योंकि होश आपने उस दिन भी न रखा होगा। तो पहले इसी जन्म में पीछे लौट कर प्रयोग करना पड़ेंगे फिर पांच वर्ष तक प्रयोगों को ले जाना बहुत सरल है। पांच वर्ष की उम्र तक पीछे लौटना बहुत सरल है लेकिन पांच वर्ष के बाद बड़ी बाधा पड़ती है इसलिए आमतौर से हमारी स्मृति पांच वर्ष की उम्र के पहले की नहीं होती। पीछे से पीछे की स्मृति करीब पांच वर्ष के करीब की होती है। हां, कुछ लोगों में तीन वर्ष तक हो सकती है लेकिन तीन वर्ष के पहले तो बहुत ही मुश्किल बात हो जाती है। वहां एकदम द्वार अटक जाता है, सब द्वार बन्द हो गया है। लेकिन जो व्यक्ति इसमें समर्थ हो जायगा, पांच वर्ष की उम्र तक की किसी भी दिन की स्मृति को पूरा जगाने लगेगा और वह पूरा जागने लगती है और इसकी जांच कर लेनी चाहिए। जैसे आज का दिन गुजर रहा है तो आज के दिन की कुछ बातें नोट करके ताले में बन्द कर दें। दो साल बाद आज के दिन में याद करें, वह सब खो जगाया आज, और तब स्मरण करें और स्मरण करके फिर ताला तोड़ें और फिर मेल करें कि वह बात मेल खा गयी कि नहीं। आप हैरान होंगे कि जितनी बातें आपने लिखी थीं उससे बहुत ज्यादा बातें और भी याद आयेंगी जो कि आपने उस दिन भी नोट नहीं कर पाईं। वह सब बातें याद आ ही जायेंगी। इसको बुद्ध ने नाम दिया है आलय विज्ञान। मनुष्य के मन का एक कोना है जिसको हमने आलय विज्ञान कहा है। आलय विज्ञान का मतलब होता है स्टोर हाउस आफ कॉंसेसनेस। जैसे घर में एक कबाड़खाना होता है, जहाँ हम सबबेकार होती चीजों को डालते चले जाते हैं। ऐसा चित्त की वृत्तियों को संग्रह करने वाला एक स्टोर हाउस है जहां सब चीजें संग्रहीत होती चली जाती हैं। वह कभी वहाँ से हटती नहीं क्योंकि कब जरूरत पड़ जाय उनकी इसलिए वह वहा संग्रहीत होती हैं। शरीर बदलता है लेकिन वह स्टोर हाऊस हमारे साथ चलता है। कब जरूरत पड़ जायगी इसलिए कुछ कहा नहीं जा सकता। और जिन्दगी में जो जो हमने किया है, जो हमने दिया है, जो जो हो रहा है, जो जो

जाना है, जो जो जिया है वह सब वहां संग्रहीत है। तो जिस व्यक्ति को यह पाँच वर्ष तक स्मरण आने लगे वह पांच वर्ष के पीछे उतर सकता है, कठिन नहीं है बहुत। प्रयोग यही रहेगा पांच वर्ष के पीछे उतरने का। पांच वर्ष के पीछे फिर एक दरवाजा है जो वहां तक ले जायगा जहां तक जन्म हुआ, पृथ्वी पर आना हुआ। फिर एक कठिनाई मालूम होती है क्योंकि मां के पेट की स्मृतियां हैं वह भी मिटती नहीं हैं। उसमें भी प्रयोग किया जा सकता है और तब उस क्षण तक पहुंचा जा सकता है जिस क्षण कंसेप्शन होता है जिस क्षण मां और पिता के शरीर मिलते हैं और आत्मा प्रवेश करती है और वहां तक पहुंच जाने के बाद अब पिछले जन्म में उतरा जा सकता है। सीधा नहीं। इतनी यात्रा पीछे करनी पड़े तब पिछले जन्म में भी सरका जा सकता है। पिछले जन्म में सरकने का पहला स्मरण जो आयेगा वह अंतिम घटना का आयेगा। ध्यान रहे, जैसे हम किसी फिल्म को उल्टा चलायें तो समझ में नहीं आयेगी एकदम से या कोई आदमी किसी उपन्यास को उल्टा पढ़े तो समझ में बिल्कुल नहीं आयेगा, बहुत मुश्किल में पड़ जायेगा इसलिए पहली दफा पीछे की तरफ ले जाने में कुछ भी समझ में नहीं आयेगा क्योंकि यह बिल्कुल उल्टा है। घटना के घटने का जो क्रम था उससे यह बिल्कुल उल्टा क्रम है। अगर आप पीछे लौटेंगे तो जन्म पहले आयेगा इस जन्म का और मृत्यु बाद में आयेगी पिछले जन्म की। मृत्यु पहले आयेगी, बुढ़ापा पहले आयेगा फिर जवानी आयेगी फिर बचपन आयेगा फिर जन्म आयेगा। तो उल्टा पहचानना होगा और उल्टे क्रम में पहचानना बहुत मुश्किल होगा। इसलिए पहली दफा स्मरण आ जाने पर बड़ी बेचैनी और तकलीफ शुरू होती है क्योंकि इसे पहचानना मुश्किल होता है कि यह क्या हो रहा है। जैसे कि कोई आदमी तय कर ले कि मैं उपन्यास को उल्टा पढ़ूंगा या फिल्म को उल्टा देखूंगा तो बहुत कठिनाई में पड़ जायगा। दस पन्द्रह दफे देखकर शायद वह ठीक जमा पाये कि यह इस तरह घटना घटी होगी। इसलिए पिछले जन्म की स्मृतियों का जो सबसे बड़ा श्रम है वह है उल्टे में देखना। जो सीधे में घटा था और सीधा उल्टा किया है, हमारे आने जाने का सवाल है। बीज को हम बोते हैं, आखीर में फूल आता है। अगर उल्टा ले जाना पड़े तो पहले फूल आ जायेगा फिर कली आयेगी फिर पौधा आयेगा, फिर पत्तियां आयेंगी, फिर सिकुड़ के छोटा अंकुर आयेगा, फिर बीज आयेगा। और इस उल्टे क्रम का हमें कोई बोध नहीं होता। इसलिए पिछले जन्म की स्मृति को आ जाने पर भी व्यवस्थित करने में बहुत समय लग जाता है। थोड़ा थोड़ा व्यवस्थित करने में कि कैसी घटना घटी होगी, उसका क्या तारतम्य रहा होगा, अभी बहुत अजीब बात है न ? मृत्यु पहले आयेगी, फिर बुढ़ापा आयेगा, फिर बीमारी आयेगी, फिर जवानी आयेगी, चीजें उल्टी घटेंगी। यानी किसी से हमने अगर शादी की और तलाक दिया होगा तो तलाक पहले आयेगा, फिर प्रेम होगा, फिर शादी होगी। तो इस उल्टे क्रम में उसको समझ पाना एकदम मुश्किल हो जायगा क्योंकि हमारे चित्त के समझने का क्रम इस तरफ है, एक दिशा में है।

चित्त के समझने का जो आयाम है वह एक दिशा में है और उल्टा देखना बहुत ही कठिन मामला है और कभी हमें उल्टे का अनुभव नहीं होता है, सीधे का ही अनुभव है लेकिन प्रयास किया जाय तो उल्टे देखकर भी समझा जा सकता है लेकिन बहुत अद्भुत होगा अनुभव। और अगर हम उल्टे देख सकें तो हम बहुत हैरान होंगे क्योंकि तलाक अगर पहले घट जाय फिर प्रेम हो, विवाह हो तो हमको ये चीजें पहली दफा दिखायी पड़ेंगी कि यह तो बहुत हैरानी की बात है। तब हमें दिखायी पड़ेगा कि तलाक घटना तो बहुत अनिवार्य था जिस तरह का प्रेम हो रहा है उसमें तलाक होने ही वाला है। और जिस तरह का विवाह हुआ था उसकी तलाक ही परिणति थी लेकिन जब हमने विवाह किया था तब हमने सोचा भी नहीं था कि इसमें तलाक कर सकते हैं लेकिन तलाक उसी विवाह का फूल था। अगर हम इस बात को पूरी तरह देख लेंगे तो आज प्रेम करना बहुत और हो जायगी बात क्योंकि उसमें

तलाक हमें पहले से दिखायी पड़ सकता था। उसमें मित्रता करने के पहले शत्रुता का आगमन दिखायी पड़ सकता है। जो मैं कह रहा हूं कि पिछले जन्म की स्मृति इस जन्म को अस्त व्यस्त कर देगी एकदम से क्योंकि आप फिर उसी तरह से नहीं जी सकेंगे जैसा आप पिछले जन्म में जिये थे। उसे वैसा लगा था और अभी भी ऐसा लग रहा है कि धन इकट्ठा करते जा रहे हैं, धन इकट्ठा करते जा रहे हैं तो बड़ी सफलता मिल जायगी, बड़ा आनन्द मिल जायगा। उसमें उल्टा दिखायी पड़ेगा। उसमें दिखायी पड़ेगा कि दुख मिला और फिर धन इकट्ठा कर रहे हैं। दुख मिलना पहले दिखायी पड़ जायगा और धन इकट्ठा करना पीछे दिखायी पड़ेगा और तब यह साफ दिखायी पड़ेगा कि धन इकट्ठा करना सुख में ले जाने का आधार नहीं था, वह ले गया दुख में। मित्र बनाना शत्रु बनाने में ले गया। जिसे हम प्रेम कहते थे वह घृणा में ले गया। तब चीजें पूरे अपने अर्थ में प्रगट होंगी और वह अर्थ हमारे इस जीवन के जीने को एकदम बदल देंगी क्योंकि तब बहुत अन्यथा बात हो जायगी।

एक फकीर के संबंध में मैंने सुना है। कोई आदमी उसके पास गया है और उससे उसने कहा है कि बड़ी कृपा होगी कि मैं आपका अनुयायी बनूं। फकीर ने कहा, अब अनुयायी नहीं बनाऊंगा। उस आदमी ने पूछा क्यों नहीं बनायेंगे ? उसने कहा, पिछले जन्म में बनाया था लेकिन जिसको अनुयायी बनाया था वही बहुत पीछे दुश्मन बन गया। अब मैं देख चुका हूं घटना को और मैं जानता हूं कि अनुयायी बनाना यानी दुश्मन बनाना। मित्र तय करना यानी शत्रुता के बीज बोना। तो उसने कहा, अब मैं शत्रु किसी को नहीं बनाना चाहता हूं इसलिए मित्र भी नहीं बनाता हूं। और अब किसी को दुश्मन नहीं बनाता हूं इसलिए मैत्री भी नहीं करता हूं। अब मैंने जान लिया है कि अकेला होना ही काफी है। दूसरे को पास लाना दूसरे को दूर ले जाने का उपाय है। बुद्ध ने कहा है, प्रिय के मिलने से खुशी होती है, अप्रिय के बिछुड़ने से खुशी होती है। प्रिय के बिछुड़ने से दुख, अप्रिय के मिलने से दुख होता है। ऐसा देखा था, ऐसा समझा था लेकिन यह बहुत बाद में समझ में आया है कि जिसको हम प्रिय कहते हैं वही अप्रिय बन जाता है और जिसे हम अप्रिय कहते हैं वह प्रिय भी बन सकता है लेकिन अगर पिछले स्मरण आ जायें तो ये स्थितियां बदल जायेंगी, बहुत भिन्न हो जायेंगी। यह स्मरण संभव है, आवश्यक नहीं, संभव है, अनिवार्य नहीं और कभी कभी तो ध्यान करते करते आकस्मिक रूपसे टूट पड़ता है। कोई प्रयोग बिना किये भी और अगर ध्यान करते करते आकस्मिक रूपसे प्रगट भी हो जाय तो उसमें बहुत रस मत लेना, देख लेना और साक्षी भाव ही रखना क्योंकि साधारणतः चित्त की इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि इतने उपद्रव हों और अनन्य उपद्रवों को एक साथ झेल सके। उस झेलने में, उसे विक्षिप्त हो जाने की पूरी संभावना है। एक लड़की को मेरे पास लाया गया था जिसकी उम्र कोई बारह वर्ष थी। उसे तीन जन्मों का स्मरण था आकस्मिक रूप से। कोई प्रयोग नहीं किया है उसने। कई बार आकस्मिक रूपसे कुछ कारणों से यह भूल हो जाती है। यह भूल ही है प्रकृति की यह कोई कृपा नहीं है उसके ऊपर। इसमें प्राकृतिक रूपसे कुछ गल्ती हो गयी है। जैसे किसी व्यक्ति को तीन आंखें आ जायें या चार आ जायें, वह भूल है और चार हाथ दो हाथ से कम ताकतवर होते हैं और चार हाथ उतने काम नहीं कर पाते हैं जितने दो हाथ। चार हाथ कमजोर कर जाते हैं, वह शक्तिशाली नहीं कर जाते। उसकी उम्र बारह वर्ष की थी। उसे ३ जन्मों का ख्याल था। इस संबंध में बहुत खोज बीन हुई। पिछले जन्म में वह जहां मैं रहता हूं वहां से कोई अस्सी मील दूर पर जिस घर में पैदा हुई उस घर में वह चालीस वर्ष की होकर मरी। उस घर के लोग अब मेरे ही गांव में ही रहते हैं। वह इन सबको पहचान सकती है। अपने भाई को, अपने लड़कों को, अपनी लड़की के बच्चों को, अपने दामाद को। वह दूर दूर के रिश्तेदारों को पहचान जाती है और ऐसी बहुत सी बातें उनसे कह सकती जो वे भी भूल गये थे। उसका बड़ा भाई अभी जिन्दा है। उसके सिर पर थोड़ी सी

चोट का निशान है। मैंने उस लड़की से पूछा कि उस चोट के संबंध में तुम्हें कुछ पता है। वह लड़की हंसी, उसने कहा कि भाई को भी पता नहीं होगा। भाई ही बता दे कि वह चोट कब लगी और कैसे लगी। भाई खुद ही याद नहीं कर पाया कि चोट कब लगी। उसने कहा कि मुझे ख्याल नहीं है। उस लड़की ने कहा, जब मेरे भाई की शादी हुई और घोड़े पर बैठता था तो घोड़े से गिर पड़ा लेकिन तब उसकी उम्र दस साल थी और घोड़े से गिरने से शादी के वक्त चोट लग गयी है और इसको गांव के बड़े बूढ़ों ने कबूल किया कि यह बात ठीक है। यह तो वह लड़का खुद भूल चुका था। फिर उसने घर में गड़ा हुआ खजाना भी बताया जो वह गाड़ गयी थी। वह भी उसने खोजकर बता दिया। पिछले जन्म में वह चालीस वर्ष की होकर मरी थी और उससे पहले वह आसाम के किसी गांव में पैदा हुई थी जहां वह सात वर्ष की होकर मरी थी। उस गांव का वह पता नहीं बता पायी, नाम नहीं बता पायी लेकिन सात वर्ष की लड़की जितनी आसामी भाषा बोलती है उतनी वह बोल सकती है और सात वर्ष की लड़कियां जिस तरह नाच सकती हैं, गाना गा सकती हैं, आसानी से उतना वह भी कर सकती है। बहुत ही खोज बीन की लेकिन इस परिवार का कोई पता नहीं चल सका। अब उसका ४६ वर्ष का तो यह अनुभव है और बारह वर्ष का यह। तो उसकी आंखों में बराबर ६५–७० साल की स्त्री की झलक दीखती है और है बारह साल की। उसके चेहरे पर ६५–७० साल की स्त्री का भाव है। न तो वह खेल सकती है किसी बच्चे के साथ क्योंकि वह बूढ़ी है, स्मृति भी सत्तर साल पुरानी है। उसको सत्तर साल होने का ख्याल है। उसकी उम्र है बारह साल लेकिन स्कूल में पढ़ नहीं सकती क्योंकि वह अपनी सखियों को बच्चा समझती है। उसकी जो स्मृति है वह सत्तर साल बन गयी है उसका व्यक्तित्व सत्तर साल का और उसका शरीर बारह साल का है लेकिन वह खेल नहीं सकती रस नहीं ले सकती। जब एक बूढ़ी स्त्री से बातें करती है, उसमें ही रस ले सकती है। उसमें इतना तनाव और परेशानी है, क्योंकि शरीर उसका बारह साल का है, स्मृति सत्तर साल की है। इनमें कोई ताल मेल नहीं बैठ पा रहा है। एकदम उदास, पीड़ित और परेशान है। मैंने उसके पिता और मां को कहा कि उसे मेरे पास ले आयें, मैं उसकी स्मृति को भुला दूंगा क्योंकि जो स्मृति याद करने का रास्ता है उससे उल्टा जाने से स्मृति भूल भी जाती है। लेकिन वे तो रस में थे, उनको तो आनंद आ रहा था, लाखों लोग आते थे घर। मैंने उनको कहा, लड़की पागल हो जायेगी लेकिन वे नहीं आये और आज लड़की की हालत करीब करीब पागल जैसी हो गयी है क्योंकि वह स्मृति को भूल नहीं सकती। उसकी कठिनाई यह हो गयी कि अब उसका विवाह कैसे हो यानी सोचती है कि सत्तर साल की बूढ़ी औरत और विवाह करने का ख्याल। तो उसमें ताल मेल नहीं है– शरीर उसका जवान है और मन बूढ़ा है। बहुत कठिनाई हो गयी। यह आकस्मिक है। आप प्रयोग से भी यह धारा तोड़ सकते हैं लेकिन उस धारा को तोड़ने की दिशा में जाना कोई बहुत आवश्यक नहीं है। किन्हीं को उसकी उत्सुकता हो तो प्रयोग कर सकते हैं लेकिन उन प्रयोगों से पहले ध्यान में काफी गहरे प्रयोग जरूरी हैं ताकि मन शांत और शक्तिशाली हो जाय। ताकि कोई भी तकलीफ पड़े तो आप उसको साक्षी भाव से देख सकें और अगर व्यक्ति साक्षी भाव में विकसित हो जाता है तो पुराने जन्म देखे गये सपने से ज्यादा नहीं मालूम पड़ते हैं। तब उसे कोई पीड़ा नहीं होती, तब ऐसा लगता है, यह सपना हमने देखा था। सपने से ज्यादा उनका अर्थ नहीं रह जाता। जब हमें पुराने दो चार जन्म याद आ जाते हैं सपने की तरह मालूम पड़ते हैं तो जन्म भी तत्काल सपने की तरह मालूम पड़ने लगता है।

जिन लोगों ने जगत को माया कहा उनके माया कहने का और कोई बुनियादी कारण नहीं है। उसका बुनियादी कारण ही जाति स्मरण है। जिन्होंने भी पिछले स्मरण किये हैं, यह सब मामला माया हो गया है,

एकदम सपना हो गया है क्योंकि कहां हैं वे मित्र जो पिछले जन्म में थे, कहां है वह मकान, कहां है वह पत्नी, कहां है वह बेटे, कहां गया वह सब जिसको हमने इतना सत्य मान रखा था कि वह है। कहां गयी वे चिन्ताएं जिनके लिए हम रात भर नहीं सोये थे, कहां गये वे दुख, वे पीड़ाएं जिनको हमने पहाड़ समझ रखा था और ढोया था। कहां गये वे सुख जिनके लिए हमने आकांक्षा की थी, कहां गया वह सब जिसके लिए हम दुखी, पीड़ित, परेशान हैं। अगर पिछले जन्म याद आ जायें और सत्तर वर्ष आप जियेंगे, उन सत्तर वर्षों में एक देखा गया सपना मालूम पड़ेगा जो आयेगा और जायेगा और तब धीरे धीरे उसमें हम अभी जी रहे हैं।

मैंने सुना है, एक सम्राट अपने बेटे के पास बैठा है। उसका बेटा मरने के करीब है। एक ही बेटा है। आठ रातें हो गयीं हैं, वह न तो बचाया जा सकता है, न मृत्यु आ रही है, बहुत मुश्किल हो गया है। मन कहता है कि बच जाय, लेकिन एक मन कहता है कि इतना दुख और पीड़ा है। आठ रात से सम्राट सोया नहीं है। चार महीने के बाद थोड़ी सी झपकी लग गयी है और सपने देखने लगा है और सपने हम अक्सर वही देखते हैं जो जिन्दगी में पूरा नहीं होता। उसका एक ही बेटा है और वह मरने के करीब बेहोश है। उसने सपना देखा है कि उसके बारह बेटे हैं और वे बड़े सुन्दर हैं, उनकी स्वर्ण जैसी काया है, बड़ा साम्राज्य है, बड़े बड़े महल हैं, सारी पृथ्वी का वह मालिक है और आनन्द में है। वह यह सपना देख ही रहा था— क्योंकि सपना देखने में बहुत देर नहीं लगती है। सपने का टाइमिंग जो है वह हमारी जिन्दगी की समय की धारा से भिन्न होता है। तो हम क्षण में वर्षों का सपना देख सकते हैं। एक क्षण झपकी लगे, आप इतना बड़ा सपना देख सकते हैं कि वर्ष तक फैल जाय और जागकर आपको मुश्किल से मालूम पड़ेगा कि उस एक क्षण में वर्षों का सपना देख लेते हैं। असल में समय की गति सपने में बहुत तीव्र है। एक क्षण में वर्षों पार किये जा सकते हैं—एक क्षण में उसने सपना देख लिया है, बारह लड़के हैं, उनकी सुन्दर स्त्रियां हैं, बड़े भवन हैं, बड़ा राज्य है और तभी उनके बारह साल का लड़का मर गया। पत्नी चीख मारकर चिल्लायी है। नींद टूटी है तो एकदम से चौंका हुआ उठा। पत्नी ने देखा, समझा शायद घबरा गया है। उसने उससे पूछा, इतना घबरा क्यों गये हो, कुछ बोलते क्यों नहीं ? उसने कहा, नहीं मैं घबरा गया हूं, बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं। मैं यह सोचता हूं कि मैं किसके लिए रोऊं, अभी बारह लड़के थे उनके लिए रोऊं या एक लड़का यह खो गया है उसके लिए रोऊं। मैं इस चिन्ता में पड़ गया हूं कि कौन मरा है। अभी बारह हैं, बड़ा राज्य है, तीस चालीस साल बीत गये। और मजा यह है कि जब मैं उन बारह लड़कों के बीच में था तो इस लड़के का मुझे कोई पता नहीं। यह था ही किधर, यह खो गया था, तू खो गयी या मैं खो गया था। अब वह महल है, तू है, यह लड़का है लेकिन वह महल खो गये, वह लड़के खो गये। कौन सत्य है ? यह सत्य है या वह। और मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं।

अगर एक बार याद आ जाय पिछले जन्मों का स्मरण तो आप बड़ी मुश्किल में पड़ जायेंगे कि अब जो देख रहा हूं वह सत्य है, क्योंकि ऐसा तो बहुत बार देखा, सब मिट गया है, सब खो गया है। तो एक सवाल उठ जायगा कि कि जो तुम देख रहे हो वह भी उतना ही सच जितना वह था। वह भी एक सपने की तरह दौड़ जायेगा और मिट जायेगा और जैसे सब सपने हम तक पहुंच गये वैसे यह सपना भी हम तक पहुंच गया है लेकिन हम फिल्म बैठकर देखते हैं, फिल्म भी सच मालूम होने लगती है। जब परदा उठता है, अंधेरा मिट जाता है, तब हम हाल के बाहर जाने लगते हैं, तब भी दो-चार क्षण लग जाते हैं वापस लौटने में। आंख मीचते मीचते हाल के बाहर आते हैं तब जरा होश आता है कि वह सपना है। सच तो यह है कि जो लोग चौबीस घण्टे नहीं रो पाते वे अपना रोना वहां जाकर निकाल लेते हैं और बड़ा अच्छा हुआ, कोई दूसरा बहाना खोजना

पड़ता। वहाँ जो रो लेते हैं, हंस लेते हैं। और जब बाहर आते हैं तो पहला ख्याल आता है कि बड़े दुख में पड़ गये। लेकिन कोई रोज रोज सिनेमा देखता है तो धीरे धीरे साफ होने लगता है लेकिन तब पिछले सिनेमा की स्मृति भूल जाती है। बार बार जब फिर दोबारा देखने जाते हैं तो फिर सच मालूम होता है। अब वह पिछले जन्मों की स्मृतियां आ जायें तो जो जन्म अभी चल रहा है यह सब सपना जैसा मालूम पड़ेगा। ये हवायें कितनी दफे नहीं चलतीं, अभी आकाश में बादल कितने दफे नहीं होते। ये सब भी खोने के काम में ही विदा हो जायेंगे। यह अगर बोध हो जाय तो माया का अनुभव होगा। लेकिन इसके साथ दूसरा भी अनुभव होगा, चीजें बड़ी सत्य हैं, घटनाएं बड़ी सत्य हैं, आती हैं और खो जाती हैं लेकिन एक सी बिल्कुल नहीं होती हैं। एक सपना आता है, दूसरा सपना आता है, तीसरा सपना आता है। वह यात्री जो एक क्षण घर से निकलता है, दूसरे में चला जाता है। एक मिट जाती है, दो मिट जाती हैं, तीसरी खो जाती है लेकिन वह यात्रा चलती चली जाती है। तो एक ही साथ दो अनुभव होते हैं—एक, कि जगत माया है और दूसरा दृश्य असत्य है और द्रष्टा सत्य है। दृश्य तो रोजबदल जाते हैं, हर बार बदल गये हैं लेकिन दृष्टा देखनेवाला वही है, वही है। और ध्यान रहे, जब तक दृश्य सत्य मालूम होते हैं तब तक दृष्टा का ध्यान नहीं होता। जब दृश्य एकदम असत्य हो जाते हैं तब द्रष्टा का ध्यान आ जाता है। इसलिये मैं कहता हूं, उपयोगी तो है लेकिन थोड़ा ध्यान में जायें और प्रयोग करें। ध्यान में जाने लगें तो जीवन को सपना की तरह देखने की क्षमता आ जाय। महात्मा होना उतना ही सपना है जैसे चोर होना सपना है और सपने अच्छे भी देखे जा सकते हैं और बुरे भी देखे जा सकते हैं और मजे की बात यह है कि चोर होने का सपना जल्दी टूट सकता है, महात्मा होने का सपना जल्दी नहीं टूट सकता। इसलिए महात्मा होने वाला सपना चोर होने वाले सपने से ज्यादा खतरनाक है।

एक मित्र ने पूछा है, कोई एक मित्र हैं वे कहते हैं कि पिछले जन्म में वे चिड़िया थे। क्या संभव है ?

आदमी कभी पशु हो सकता है लेकिन दोबारा पशु नहीं हो सकता। पीछे लौटना नहीं होता, पीछे लौटना असंभव है। यह तो हो सकता है कि पीछे की योनि में से आगे आना पड़े लेकिन यह नहीं हो सकता कि आगे की योनि में से पीछे लौटना होता है। इस जगत में पीछे लौटना होता ही नहीं, उपाय ही नहीं। दो ही उपाय हैं — या तो आगे बढ़ें या जहां हैं वहां ही रुक जायें, पीछे नहीं लौट सकते। जैसे स्कूल में बच्चा पहली कक्षा में पढ़ता है वह उत्तीर्ण हो जाय तो दूसरी कक्षा में चला जाय और अनुत्तीर्ण हो जाय तो पहली कक्षा में ही रह जाय लेकिन पहली कक्षा से निकलने का कोई उपाय नहीं है। जब दूसरी कक्षा में असफल हो जाय तो उसे दूसरी कक्षा में ही रख सकते हैं, पहली में उतारने का भी कोई उपाय नहीं। तो जिस योनि में होते हैं उस योनि में टिक सकते हैं बहुत लम्बे समय तक, या हम आगे जा सकते हैं लेकिन पीछे नहीं लौट सकते। इसकी कोई कठिनाई नहीं है कि पीछे कोई पशु पक्षी योनि में रहा हो। रहा ही है। कितने जन्मों तक रहा है यह दूसरी बात है, इसमें जरा भी कठिनाई नहीं है। और अगर हम पिछले जन्म में उतरेंगे तो हमें याद आयेंगे, जब हम चिड़िया की तरह होंगे, पशु की तरह होंगे, स्त्री की तरह होंगे, पक्षी भी रहे होंगे, और और नीचे और और नीचे। इतनी जड़ता रही होगी जहां कि चेतना का कोई सूत्र नहीं, खोजना मुश्किल है। पहाड़ भी जीवन है। वहां भी जीवन है लेकिन चेतना नहीं के बराबर है। ९९ प्रतिशत जड़ता, एक प्रतिशत चेतना है। निरंतर चेतना बढ़ती चली जाती है और जड़ता कम होती चली जाती है। परमात्मा है वह सौ प्रतिशत चेतन है। पदार्थ और परमात्मा में प्रतिशत का अन्तर है। पदार्थ और परमात्मा में कोई क्वालिटी का अन्तर नहीं है, क्वांटिटी का अंतर है। कोई गुण का अन्तर नहीं है, मात्रा का अन्तर है। इसलिए पदार्थ परमात्मा हो सकता है। विकास, निरंतर विकास, जड़ता छूटती चली जाय तो यह बहुत हैरानी कठिनाई की बात नहीं कि कोई आदमी पिछले जन्मों में पशु रहा हो। बहुत कठिनाई की बात तो तब होती जब पिछले जन्म में आदमी होते हुए भी पशु ही होते। यह तो बहुत

आश्चर्य नहीं है। पिछले जन्म में कभी न कभी हम सभी पशु रहे हैं लेकिन आदमी होते हुए भी हमारी चेतना इतनी क्षीण हो सकती है कि सिर्फ जगत के तल पर हम आदमी मालूम हो सकते हैं। अगर हम अपनी वृत्तियों को खोजने जायें तो हमें ऐसा ही लगेगा कि हम पशु तो नहीं रहे हैं लेकिन आदमी भी नहीं रहे हैं। कहीं बीच में अटक गये। जैसे ही मौका आता है, हम फिर से पशु होने में देर नहीं लगाते। जैसे कोई आदमी आता है, आपको धक्का मार जाय, आप बड़े भले आदमी की तरह चले जायेंगे और उस आदमी ने आपको घूंसा मार दिया, और आपको गाली दे दिया तो आपका भला आदमी तिरोहित हो गया और आप वहां खड़े होंगे जहां आप पशु होने में रहे हैं। जब पशु निकलेगा तो इतने जोर से प्रगट होता है कि ऐसा लगता है कि यह आदमी कभी आदमी रहा होगा कि नहीं। यह जो हमारी स्थिति है उसमें हमारा वह सब मौजूद है जो हम कभी रहे होंगे। हमेशा ही उसकी परतें हैं भीतर और अगर जरा खोदा जाय तो बिल्कुल भीतर की परतों तक पहुंच सकते हैं। हम पत्थर की पर्त पर भी पहुंच जा सकते हैं, वह भी हमारी पर्त है। बहुत गहरे अन्तः-करण में हम अब भी पत्थर हैं इसलिए अगर वहां तक हमें खरोंचा जाय तो हम पत्थर की तरह व्यवहार करते हैं, पशु की तरह भी व्यवहार करते हैं और आगे की हमारी सब संभावनाएं जो पता नहीं हैं—इसलिए कभी कभी छलांग लगाकर छूते हैं, फिर जमीन पर वापिस चले आते हैं। यह हमारी संभावनाएं हैं। देवता भी हम कभी हो सकते हैं लेकिन कभी रहे नहीं है। परमात्मा भी हम कभी हो सकते हैं, लेकिन जो हम रहे हैं वह हमारी स्थिति है। तो ये दो बातें हमारे अन्दर खोदा जाय तो हमारे भीतर की स्थितियां मिल जायेंगी और अगर हमें और आगे खोदा जाय तो हमारी आगे की स्थितियों का अनुभव होता है। लेकिन जैसे कोई आदमी जमीन पर छलांग लगाये, एक सेकेण्ड में जमीन के बाहर हो जाता है। आकाश में होता है लेकिन फिर जमीन पर खड़ा होता है ऐसे ही हम छलांग लगा लगा के आदमी होते रहते हैं। कभी कभी आदमी होते हैं फिर भाग कर पीछे खड़ा हो जाते हैं। बहुत गौर से देखेंगे तो चौबीस घंटे में हम कभी कभी ठीक आदमी होते हैं। हम सब जानते हैं।

भिखमंगे आपने देखे हैं। वह सुबह भीख मांगने आता है, शाम नहीं आता। क्योंकि शाम तक आदमी होने की संभावना कम हो जाती है। सुबह सुबह ताजा आदमी होता है रात भर का विश्राम किया हुआ। न कोई झगड़ा, न कोई कलह, न कोई गाली, न गलौज। सुबह उठता है, ताजा ताजा होता है। भिखारी सामने आ जाता है तो थोड़ी आशा होती है कि वह आदमीयत का व्यवहार करेगा लेकिन सांझ ऐसा नहीं होता। वह जानता है कि दिन भर की खरोंच ने आदमी के भीतर की परतें जगा दी होंगी—दफ्तर ने, दुकान ने, बाजार ने, दंगा-फिसाद ने, अखबार ने, नेताओं ने गड़बड़ कर दिया होगा और वह भीतर की जो पर्तें हैं वह जाग गयी हैं सांझ क्योंकि सांझ को आदमी थक गया होता है, जानवर हो गया होता है इसलिए रात में जो क्लब पैदा होते हैं उनमें जनवरीयत दिखायी पड़ती है। इसका और कोई कारण नहीं है। रात के क्लब पशुओं की प्रवृत्तियों के हो जाते हैं। वह दिन भर का थका हुआ आदमी आदमीयत से थक जाता है। वह कहता है, हमें पशु चाहिए, शराब चाहिए, जुवा चाहिए, नाच चाहिए, नंगापन चाहिए। तो रात के जो क्लब हैं वह आदमी की पशुता के इर्द गिर्द निर्मित होते हैं इसलिए प्रार्थना करने में वह सुबह ही अच्छा है। इसलिए मंदिर सब सुबह घंटियां बजाते हैं। रात में क्लबों के द्वार खुल जाते हैं, जुवा घर खुल जाते हैं, शराब खाने खुल जाते हैं। वेश्याएं सुबह सुबह आमंत्रण नहीं दे पाती हैं, रात ही आमंत्रण दे सकती हैं। दिन भर का थका हुआ आदमी जानवर हो जाता है इसलिए रात के अलग धंधे हैं, सुबह की अलग दुनिया है। तो चट सुबह मस्जिद अजान दे देती है, मंदिर सुबह घंटी बजा देते हैं। थोड़ी सी आशा है कि सुबह का जागा हुआ आदमी शायद परमात्मा की तरफ थोड़ी आंख उठा ले। सांझ को थके हुए आदमी से क्या आशा रह जाती है और इसलिए बच्चों से ज्यादा आशा होती

है कि जो परमात्मा की तरफ झुक जायें। बूढ़ों से कम आशा होती है, वह साझ है जिन्दगी की और जिन्दगी भर में उनका सब उभाड़ दिया होगा। इसलिए जितनी जल्दी हो सके, जितनी सुबह ही सके उतनी जल्दी यात्रा पर निकल जाना चाहिए। सांझ आ ही जायगी। इसके पहिले कि सांझ आ जाय सुबह हम यात्रा पर निकल गये हों तो यह भी हो सकता है कि सांझ भी हमें मंदिर में पाये।

तो वह मित्र ठीक पूछते हैं कि संभव है, कोई आदमी पशु रहा हो, पक्षी रहा हो। ध्यान रखना यह चाहिए कि अब भी तो पशु और पक्षी नहीं हैं।

●●●

—अंतर्स्फुरणा—

मैं बहुत उलझन में थी कि, परमात्मा मानकर रात दिन जिनकी लीलायें गा रही हूं, और जीवन चरित्र पढ़ रही हूं, वे सच में कभी थे या नहीं!

लेकिन, आपको देखकर बहुत बहुत आश्वस्त हुई हूं। और जिनको मानने में मुझे संदेह होता था, उनके प्रति भी पूरा प्रेम जग रहा है। क्योंकि अब तो कृष्ण, राम, मोहम्मद, जीसस, बुद्ध, लाओत्से, महावीर और गांधी, उन सबने अपनी पूर्णता को पाने के लिये एक ही शरीर खोज लिया है।

कृष्ण का समग्र से प्रेम और आनंद पूर्ण संगीत,
राम की विनम्रता,
मोहम्मद का साहस,
जीसस का भोलापन और सरलता,
बुद्ध की प्रगाढ़ शांति,
लाओत्से का जीवनरस,
महावीर की क्रांत कान्ति, और
गांधी की सत्यपिपासा, और न जाने क्या क्या
किस किस का!
सब एक से ही प्रवाहित हो रहा है,
वह मेरे 'रजनीश' है।

जयवंती—
जूनागढ़

नारी और शांति

(जूनागढ़ महिला सभा में दिया गया एक प्रवचन)

संकलन : श्रीमती जयवंती, जूनागढ़

नारी और शांति के सम्बन्ध में कुछ थोड़े से सूत्र समझना उपयोगी है। एक तो सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि नारी का अब तक कोई व्यक्तित्व नहीं रहा है। और पुरुष ने उसके व्यक्तित्व को मिटाने की भरसक चेष्टा भी की। नारी या तो किसी की बेटी होती है, या किसी की बहन होती है, और या किसी की पत्नि होती है। नारी का अपना होना नहीं है। विवाह हो तो उसका नाम भी पुरुष बदल डालता है। नया नाम रखता है। विवाह हो जाने के बाद उसका सीधा कोई तादात्म्य, कोई सीधी (Identity) अपने साथ नहीं होती। वह किसी की श्रीमती हो जाती है। उसके परिचय में भी हम कहते हैं, श्रीमती खन्ना या श्रीमती शर्मा या कुछ। सीधा उसका कोई व्यक्तित्व समाज के समक्ष नहीं होता। बीच में पुरुष को लेकर ही उसका कोई अर्थ बनता है।

पुराने शास्त्र कहते हैं कि जब वह कुंआरी हो तो पिता उसकी रक्षा करे, जब वह युवा हो तो पति उसकी रक्षा करे, और जब वह वृद्ध हो जाय तो उसके बेटे उसकी रक्षा करें। लेकिन किसी भी स्थिति में उसका अपना कोई अस्तित्व स्वीकार नहीं किया गया है। नारी को समझने के लिए पहली बात यह समझनी जरूरी है कि उसके पास व्यक्तित्व नहीं है। और जिसके पास व्यक्तित्व न हो, वह शांति का आधार कभी भी नहीं बन सकती। जिसके पास व्यक्तित्व नहीं है, वह स्वयं इतना अशाँत होता है कि वह शांति का आधार नहीं बन सकता। **जीवन की बड़ी से बड़ी शांति की उपलब्धि अपने व्यक्तित्व को पाने से शुरू होती है।** और जिस दिन जो हम बनने को पैदा हुए हैं, वही बन जाते हैं, उसी दिन मन प्रफुल्लता से भर जाता है।

एक गुलाब का पौधा है। उसकी खुशी कब पूरी होती है? उसका आनंद कब प्रगट होता है? जब उसके फूल पूरी तरह खिल जाते हैं जब आकाश की हवाओं को वह अपनी सुगंध लुटा देता है। और जब सूरज की किरणों में उसके खिले हुए फूल नाच लेते हैं। और जब राह से गुजरने वाले अपरिचित राहगीर उसकी सुगंध से संगीत से भर जाते हैं, तब वह पौधा तृप्त हो जाता है। लेकिन जब तक किसी पौधे में फूल न आये तब तक उस पौधे में एक बेचैनी, एक अशांति, एक परेशानी बनी रहती है। नारी फूल को उपलब्ध ही नहीं हो पाती है, क्योंकि उसका व्यक्तित्व ही अस्वीकृत है। उसके व्यक्तित्व को ही जगह नहीं है। अपनी हैसियत जब तक नारी को उपलब्ध नहीं है, तब तक नारी शांत नहीं हो सकती। और नारी की अशांति इतनी मंहगी है जिसका हिसाब नहीं। यद्यपि पुरुष ने ही नारी का व्यक्तित्व छीना है, और पुरुष ही नारी के अशांत होने से हजार गुना अशांत हो गया है। लेकिन उसे पता नहीं चलता कि उसने व्यक्तित्व छीना है, इसलिये इतनी अशाँति है। बल्कि शायद तर्क यही कहता है, सभी मूढ़ तर्क इसी भाँति चलते हैं कि, वह सोचता है कि नारी का व्यक्तित्व थोड़ा बहुत और बचा हो वह भी छीन लेना जरूरी है ताकि शांति पूरी हो जाय। **शांति होगी व्यक्तित्व के प्रगट होने से, व्यक्तित्व छीन लेने से नहीं।**

क्योंकि नारी कभी तृप्ति अनुभव कर ही नहीं पाती। क्योंकि व्यक्तित्व छीना गया है, इसलिए वह कभी (Authentic) प्रमाणिक रूप में अपने पैरों पर खड़ी ही नहीं हो पाती। और हमने सारी व्यवस्था ऐसी की है कि खड़ी न हो पाय। हजारों वर्षों तक नारी को शिक्षा नहीं दी, सिर्फ इसलिए कि शिक्षित होते ही वह अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करेगी। पैर के नीचे से जमीन खींचनी हो तो शिक्षा मत दो। अगर शिक्षा न दी जाय तो पंगु हो जाता है व्यक्ति। और उस समाज में जहां शिक्षित की गति होगी, नारी कोई गति न कर पायेगी, इसलिए नारी को वर्जित रखा। हजारों वर्षों तक शिक्षा नहीं दी। लेकिन अशिक्षित नारी का मतलब ? अशिक्षित माँ, अशिक्षित पत्नि, अशिक्षित बेटी, अशिक्षित बहन, अशिक्षित प्रेमिका। नारी को अशिक्षित रहने का अर्थ क्या होगा ? कि जीवन के सब तलों पर अशिक्षित नारी खड़ी हो जायेगी। और शिक्षित पुरुष और अशिक्षित नारी के बीच इतना बड़ा फासला हो जायगा कि, उसके तालमेल बिठाना मुश्किल है। इसलिये धीरे-धीरे नारी की स्थिति एक दासी की हो गई, और पुरुष मालिक बन गया। पति का मतलब ही मालिक होता है। स्वामी का मतलब भी मालिक होता है। और हजारों साल से स्त्री पति को स्वामी कह रही है, और अपने पत्रों में आपकी दासी लिखके दस्तखत कर रही है। पुरुष बहुत प्रसन्न हो रहा है, पुरुष की प्रसन्नता समझी जा सकती है। लेकिन नारी की नासमझी समझना बहुत मुश्किल है। **और दासी और मालिक के बीच कभी भी अच्छे संबंध नहीं हो सकते हैं।** हां मित्रों को बीच अच्छे सम्बन्ध हो सकते हैं, शांतिपूर्ण, आनंदपूर्ण, प्रेम से भरे। लेकिन एक गुलाम और एक मालिक के बीच कैसे अच्छा सम्बन्ध हो सकता है ? गुलाम और मालिक के बीच हमेशा तनाव होता है। अशांति होगी बैचैनी होगी, संघर्ष होगा। और इसलिये हजारों साल से स्त्री और पुरुष के बीच भीतरी एक संघर्ष है, जो दिन रात चल रहा है। नारी की बगावत दिखाई नहीं पड़ती। क्योंकि वह रोज चल रही है, प्रतिपल चल रही है।

एक एक दाम्पत्य दुःखद है। कलह से भरा हुआ है। पति पत्नि के बीच के सम्बन्ध अत्यन्त अप्रीतिपूर्ण हैं। अत्यन्त तने हुए हैं, खिचे हुए हैं। लेकिन धीरे-धीरे ऐसा समझ लिया गया है कि यही स्वाभाविक है। हजारों हजारों साल तक कोई बात चले तो स्वाभाविक मालूम पड़ने लगती है। अब ऐसा समझ लिया गया है कि यह स्वाभाविक है बल्कि इसको इतना स्वाभाविक समझ लिया है कि जो लोग शांति की खोज में जाते हैं, वह पत्नि से मुक्त हुए बिना नहीं जाते हैं। पहले पत्नि से मुक्त होते हैं, फिर शांति की खोज में जाते हैं। ख्याल यह बन गया है कि पत्नि के साथ तो शांति सम्भव ही नहीं है। तो अगर पत्नि से भाग सके, कोई सन्यासी हो सके तभी शांत हो सकते हैं। नहीं, यह सवाल पत्नि के साथ का नहीं है, स्त्री और पुरुष के बीच अब तक हमने जो व्यवस्था की है वह गलत है। वह अशांति का आधार है। अगर स्त्री और पुरुष के बीच कभी भी शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण, आनंद पूर्ण, मैत्री पूर्ण व्यवस्था लानी हो तो पहली तो बात जरूरत है कि स्त्री ठीक पुरुष के समकक्ष आ जाय, इंच भर भी नीचे नहीं। स्त्रियाँ कोशिश करती हैं पुरुष के समकक्ष आने की, लेकिन वह कोशिश सब बेहूदी है या तो लम्बी ऐड़ी का जूता पहन के पुरुष के समकक्ष आना चाहती हैं ऊंचाई बराबर बराबर करना चाहती हैं। लेकिन उस भांति कोई पुरुष के समकक्ष होने का अर्थ नहीं है। लंबी ऐड़ी का जूता पहन के सिर्फ चलने में तकलीफ होती है। कोई और फर्क नहीं पड़ता। पुरुष के चलने में और स्त्री के चलने में भी कमजोरी फर्क पड़ जाता है और कोई फर्क नहीं पड़ता। और जितनी लंबी ऐड़ी होती चली जाती है उतनी स्त्री की थोड़ी ऊंचाई तो बढ़ती है, लेकिन शरीर की ऊंचाई बढ़ने से पुरुष के समकक्ष आने का मार्ग नहीं है। यह समकक्ष होने की बड़ी बचकानी तरकीब हुई। (Substitute) बहुत ही साधारण हुआ। इस तरह कुछ हो नहीं सकता।

दूसरा उपाय यह है कि पुरुष जिस ढंग से रहता है उसी ढंग से स्त्री रहने लगे तो शायद समकक्ष आ

जाय। वह जैसे कपड़े पहनता है वह पहनने लगे, पश्चिम में वैसी होड़ शुरू हुई, आज नहीं कल यहां भी होड़ शुरू होगी। वह इस तरह के ढंग जो पुरुष अख्तयार करता है वह भी करे, पुरुष शराब पीता है क्लब में तो वह भी पीये, और पुरुष सिगरेट पीता है तो वह भी पीये। और जो जो पुरुष करता है वह स्वयं भी करे तो वह सोचती है कि शायद पुरुष के समकक्ष आ जाय। यह भी बड़ी बचकानी बात है। छोटे बच्चे शायद इसलिये सिगरेट पीना शुरू करते हैं कि सिगरेट पीने के साथ उन्हें लगता है कि एक (Prestige) एक शक्ति, एक पावर जुड़ा हुआ है। जब वह लोगों को और अपने पिता को सिगरेट पीते देखता है तब वह समझता है कि सिगरेट पीने से कुछ बड़े होने का संबंध है। छोटे-बच्चे भी अकड़ के सड़क पर सिगरेट पीते हैं। वह सिर्फ इसलिए कि ताकि बड़े होने का मजा ले सकें। वह कोई छोटे नहीं हैं तो एक होड़ जहां पुरुष के समकक्ष होने की इस तरह की कोशिश की जा रही है कि कपड़े बदल लो सिगरेट पी लो, शराब पी लो, क्लबों में जो पुरुष कर रहा है वही करो। जिन अश्लील ढंग से पुरुष गालियां बकते हैं वैसी गालियां बको। जिस बेहूदे ढंग से वे बातें करते हैं, उसी बेहूदे ढंग से स्त्रियाँ भी बातें करने लगी हैं। अगर वे सड़कों पर धक्का देके चलते हैं तो स्त्रियाँ भी धक्का देने लगीं। जिस भांति समकक्ष होने की कोशिश चल रही है, यह समकक्ष होने की कोशिश नहीं है, बड़े पागलपन की कोशिश है। समकक्ष होने का कुछ और मतलब है। समान खड़े होने का यह मतलब नहीं है कि स्त्रियाँ पुरुष जैसी हो जायें। **पुरुषों के समान होने का यह अर्थ है कि पुरुषों ने पुरुष होने में जितना विकास किया है, स्त्रियाँ स्त्री होने में उतना विकास करें।** यह बहुत अलग बात है। पुरुषों की नकल से स्त्रियाँ पुरुषों के समान नहीं हो सकेंगी। और जबतक स्त्रियाँ पुरुषों के समान नहीं हो जाती, समान का मतलब पुरुषों जैसी नही, पुरुषों के समान होने का मतलब पुरुष ने जितना विकास किया है, उतना ही विकास, पुरुष के रास्तों पर नहीं, स्त्री के अपने रास्ते हैं उन पर। और यदि स्त्री और पुरुष समकक्ष नहीं हो जाते हैं तो उन दोनों के बीच कभी भी शांति, प्रेम स्थापित नहीं हो सकते। फासला इतना ज्यादा है, उसे पार करना मुश्किल है। लेकिन पुरुषों के समकक्ष होने की जो मैंने होड़ कही वह जूते की ऐड़ी से लेकर कपड़ों वस्त्रों तक, शिक्षा तक भी चल रही है। जब मैं कहता हूं कि स्त्रियाँ भी शिक्षित होनी चाहिये तो मेरा मतलब यह नहीं है कि वे ठीक पुरुषों जैसी शिक्षा से शिक्षित हो जायें। तो उपद्रव होगा, वैसा उपद्रव भी हो रहा है। अगर स्त्रियों को गणित में, तर्क में, व्यायाम में, फिजिक्स में, केमिस्ट्री में, विज्ञान में ठीक पुरुषों जैसा शिक्षित कर दिया जाय, तो उस सारी शिक्षा में उनके भीतर सेक्स तत्व का अनिवार्य हिस्सा मर जाता है। असल में कुछ चीजों का (Co-Existence) नहीं होता। कुछ चीजों का सह-अस्तित्व नहीं होता है। जैसे, अगर कोई आदमी बहुत तर्कनिष्ठ हो तो उसके भीतर काव्य का-अस्तित्व नहीं होगा। अगर कोई व्यक्ति बहुत तर्क युक्त हो तो उसके भीतर कविता मर-जायेगी। और अगर किसी के भीतर कविता विकसित हो तो उसके भीतर तर्क नहीं रह-जायगा। इन दोनों का सह अस्तित्व नहीं होता। हो ही नहीं सकता, क्योंकि काव्य के सोचने का ढंग तर्क मुक्त है और तर्क के सोचने का ढंग काव्य से बिल्कुल उल्टा है।

आइन्सस्टीन बड़ा गणितज्ञ था। उसने जिस युवती को विवाह किया था, वह एक जर्मन भाषा की कवियत्री थी। एक गणितज्ञ था, एक कवियत्री थी। और फिरां ने सोचा था कि आइन्सटीन को पहली ही रात अपनी कुछ कवितायें सुनायें। बड़ी प्रशंसा हुई थी उसकी कविताओं की। उसने पहली ही रात अपनी कुछ कवितायें आइन्सटीन को सुनाईं, वह बड़े आश्चर्य से सुनता रहा, और जब पूरा सुन चुका तब फिरां घबड़ा गयी। क्योंकि वह ऐसे सुन रहा था जैसे कोई परीक्षक बच्चे की परीक्षा लेते वख्त उसको देखता है। या कोई पुलिस का इन्सपेक्टर किसी चोर की छानबीन करता है। उसके खीसे की छानबीन करता है, ऐसे देख रहा था। जब वह पूरा बोल चुकी तो वह डरी कि पूछूं भी कि नहीं कि कैसे लगा। फिर उसने पूछा डरते डरते कि कैसे

लगा ? आइन्स्टीन ने कहा क्या Absurd ? यह क्या बेहूदी और फिजूल की बातें ! इनका कोई मतलब ? मैं तो दंग हूं कि इतनी बुद्धिहीन बातें भी तू सोच सकती है। अपने प्रेमी को उसने सोचा है, जैसा कि कवि हजारों वर्षों से सोचते रहे हैं। प्रेमी अपनी प्रेयसी को चांद के चेहरे की तुलना देते रहे हैं। प्रेमी प्रेयसिओं को, प्रेमिका प्रेमी को चांद में देखते रहे हैं। तो उसने वह गीत में गाया है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेयसी के लिये चांद की उपमा देता है कि तेरा चेहरा चांद की भांति है। और आइन्स्टीन कहता है—पागल हो गयी, चांद कितना बड़ा, चेहरा कितना छोटा, गणित का हिसाब तो बहुत अलग है। कहां चांद, कहां चेहरा, कोई संबंध नहीं दोनों का। और चांद पर इतने बड़े गड्ढे हैं, इतनी बड़ी खाइयाँ है, इतने पहाड़ हैं, अगर किसी स्त्री के चेहरे पर हो तो कोई पसन्द ही नहीं कर सके। यह फिरां तो बहुत घबड़ा गयी। यह आइन्स्टीन को नहीं समझा पाती। वह बहुत कोशिश करती है कि नहीं यह तो उपमा है। लेकिन आइन्स्टीन कहता है, जो उपमा सीधी ही गलत है, वह ठीक कैसे हो सकती है ? नहीं नहीं कभी यह नहीं हो सकता। आइन्स्टीन कहता है कि अगर किसी स्त्री के सिर की जगह चांद रख दिया जाय तो उसका पता भी नहीं चलेगा, इतना वजनी है चाँद कि वह कहाँ दब खो जायगी कुछ पता ही नहीं। एकदम गलत है, एकदम ठीक नहीं। फिरां ने कसम खा ली कि उसे कविता नहीं बतायेगी। क्योंकि कविता वह पकड़ नहीं सकता।

मेरी अपनी दृष्टि ऐसी है स्त्री और पुरुष के व्यक्तित्व में एक बुनियादी भेद है। और यह शुभ है। और परमात्मा की बड़ा कृपा है। बड़ा आकर्षण है स्त्री और पुरुष के बीच। पहला जो भेद है, वह बहुत गहरा है। अगर वह भेद टूटता है तो या तो पुरुष स्त्रैण हो जायगा, या तो स्त्री जो है वह पुरुष हो जायगी। दोनों हालत में नुकसान है।

स्त्री की शिक्षा तो होनी चाहिये, पुरुष के ही बराबर, लेकिन उसके अपने आयाम में, उसकी अपनी ही दिशा है, उस दिशा में शिक्षा अगर होगी, तो ही सार्थक है। आज हम शिक्षा भी दे रहे हैं, तो वो सारी की सारी शिक्षा पुरुष के लिये ईजाद की गयी है। और उसे पुरुष के लिये ईजाद की गयी, स्त्री को भी उसी शिक्षा के ढांचे में ढाला जा रहा है। उसके परिणाम घातक हो रहे हैं। युनिवर्सिटी से पढ़ लिखकर जो लड़की निकलती है, उसमें स्त्रैण तत्व थोड़ा अनिवार्य रूपेण कम हो जाता है। कम हो ही जायगा। कम हो जाना अनिवार्य है क्योंकि शिक्षा पुरुष के लिये ईजाद की गयी है। थोड़ा उल्टा सोंचे तो समझ में आ जायगी बात। कोई नगर ऐसा हो, जहाँ की सारी शिक्षा स्त्रियों के लिये ईजाद की गयी हो। संगीत की शिक्षा वहां दी जाती हो, नृत्य की शिक्षा वहां दी जाती हो, काव्य की शिक्षा दी जाती हो, भोजन बनाने की, कपड़े सीने की, मकान सजाने की, बच्चों को पालने और बड़ा करने की, यह सारी शिक्षा दी जाती हो, किसी नगर में स्त्रियों के लिये शिक्षा दी जाती हो। और उस नगर में पुरुष बहुत दिन तक अशिक्षित रखे गये हों। फिर पुरुषों में बगावत फैले और वो कहें कि हमें शिक्षा की जरूरत है, हम भी शिक्षा लेंगे। और स्त्रियाँ कहें कि ठीक है, हमारे कालेजों में आकर तुम शिक्षा ले जाओ। तो वह पुरुष भी नाचें, गायें, गीत बनायें, कविता करें, घर सजायें, बच्चों को पालने की शिक्षा लें, तो क्या परिणाम होगा उस गाँव का ? उस गाँव के पुरुष किसी गहरे अर्थ में स्त्रैण हो जायेंगे। उस गाँव के पुरुषों में जो पुरुष होता है वह कम हो जायेगा। वह जो पुरुष की तीव्रता है, प्रखरता है, वह क्षीण हो जायेगी। वह जो पुरुष के कोने हैं व्यक्तित्व में, वह गोल हो जायेंगे। वह राउन्ड हो जायेंगे। उनको झाड़ दिया जायगा। जैसा दुर्भाग्य उस गाँव में पुरुषों के साथ होगा, वैसा दुर्भाग्य पूरी पृथ्वी पर आज स्त्रियों के साथ हो रहा है। उनके व्यक्तित्व का बुनियादी भेद छोड़ा जा रहा है। उस बुनियादी भेद को समझ लेना बहुत उचित है। **क्योंकि वह बुनियादी भेद ठीक से समझ के अगर दोनों को अपनी दिशाओं में समशिक्षित किया जाय, समविकास दिया जाय और समकक्ष लाया जाय तो ही दाम्पत्य**

शांतिपूर्ण हो सकता है। और यह पृथ्वी पूरी शांत हो जाय अगर दंपति शांत हो जायें। क्योंकि हमारा सारा वैमनस्य, सारा दुःख, सारी पीड़ा हमारे छोटे छोटे घरों के उपद्रव में पैदा होती है।

जैसे एक गाँव में घर घर से धुआं निकलता है, अपने अपने चौके से, फिर गाँव के पूरे आकाश पर धुँआ छा जाता है। छोटा छोटा एक एक चौके से निकला हुआ धुआँ पूरे धीरे धीरे गाँव के आकाश को भर देता है। सारी पृथ्वी अशांति से भर जाता है क्योंकि जो व्यक्तियों के मिलन का मूल बिंदु है, मूल इकाई है, स्त्री और पुरुष वह मिलन दुःखद है। वहां अशांति है। वह अशांति फैलते फैलते सारे जगत को घेर लेती है। फिर बहुत रूपों में प्रगट होती है। वे रूप इतने भिन्न हो जाते हैं कि कहना मुश्किल है। अगर गाँव के घर घर से निकला हुआ धुआँ, गाँव की छाती पर एक धुयें का बादल बन कर आ जाय, तो कोई भी विश्वास न करेगा कि मेरे चूल्हे ने इस बादल को बनाया। कहेगा कि छोटा सा चूल्हा, हमारा चूल्हा इतना बड़ा अंधेरा बादल कैसे बना सकता है? नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता। लेकिन उसे पता नहीं कि करोड़ करोड़ चूल्हे इसी तरह छोटे छोटे जलके इतना थोड़ा थोड़ा धुआँ फेंक कर एक बड़ा बादल बना देते हैं। और वे बादल बड़े खतरनाक हो सकते हैं। वे बादल सूरज को छिपा ले सकते हैं। वे बादल खतरा बन जाते हैं। एक हवाई जहाज को गिरा सकते हैं। अब यह कोई सोच भी नहीं सकता कि एक घर के चूल्हे में उठा हुआ धुआँ किसी हवाई जहाज को गिरा सकता है। अगर वह बहुत सघन हो जाय तो उसका पीक बन जाता है। एक मजबूत पर्त बन जाती है। वह पर्त इतनी मजबूत है कि तेज हवाई जहाज अगर उसके भीतर से गुजरता, उस तेजी के कारण, वह जहाज को डगमगा दे सकता है। लेकिन हमारी कल्पना में नहीं आ सकता कि चूल्हे से उठा हुआ धुआँ और ऐसा कुछ कर सकेगा। **एक एक घर से उठी हुई अशांति धीरे धीरे विश्व अशांति बन जाती है।** और सारी दुनिया में चेष्टा चलती है, शांति, शांति, शांति, वह शांति नहीं आती क्योंकि मूल इकाई अशांत है। पुरुष और स्त्री का मिलन मूल इकाई है समाज की। फिर बाकी समाज उसका फैलाव है। अकेला पुरुष समाज नहीं है। अकेली स्त्री समाज नहीं है। अकेला पुरुष आधा है। अकेली स्त्री आधी है। जब वे दोनों एक मूल इकाई में मिलते हैं, तब समाज शुरू होता है। कम से कम समाज के लिये दो तो चाहिये। और फिर वही इकाई अगर ज्वर ग्रस्त हो, बीमार हो, परेशान हो, कष्ट में हो, लेकिन हम उसके कष्ट को प्रगट भी नहीं होने देते। मैं हजारों घरों में ठहरता हूं। लाखों लोगों से व्यक्तिगत मिलने, उनकी व्यक्तिगत तकलीफ में उतरने का मुझे मौका मिला है। मैं इतना हैरान हो गया हूं कि वे चेहरे जो बाहर हंसते मालूम पड़ते हैं, वे भीतर हंसते हुए नहीं है। वे पति और पत्नियाँ क्लब में, बाजार में, और सिनेमा गृह से जैसे चमकते दमकते हंसते हुए बात करते मालूम पड़ते हैं, वह उनके घर की असली शकल नहीं है। घर इससे बिल्कुल उल्टी शकल है। वह बाहर जो दिखाई पड़ रहा है, यह बिल्कुल धोखे का है।

सच्चाइयां बहुत और हैं। बहुत गंदी, बेहूदी और बहुत कुरूप, और वहां एकदम गहरी अशांति है। और पति पत्नी की जो अशांति है वह उनके बच्चों में भी प्रवेश कर जाती है। वह घर के कोने कोने, हवा हवा में छा जाती है।

जब मैं एक यूनिवर्सिटी में था, तो मैं बड़ा हैरान था। कोई सौ प्रोफेसर मेरे साथ थे। यूनिवर्सिटी की क्लास तो बारह बजे शुरू होती, लेकिन प्रोफेसर थे इस स्टाफ में कि साढ़े दस बजे ही हाजिर हो जाते। यूनिवर्सिटी की क्लास किसी की एक बजे शुरू होती, किसी की दो बजे शुरू होती, किसी की तीन बजे खतम हो जाती, किसी की दो बजे खतम हो जाती, और मैं देखता कि वह साढ़े चार बजे, जब तक कि चपरासी बंद न करता तब तक वे वहां बैठकर गप शप करते रहते। मैंने उनसे कई बार पूछा कि जब यहां काम खतम हो

गया, अब चले क्यों नहीं जाते ? उन्होंने कहा घर की झंझट से यहीं बेहतर है। जितना समय शांति से बीत जाय वही अच्छा। यह बहुत हैरानी की बात है कि पति घर से भागा रहे शांति के लिये ! शांति के लिये घर लौटना चाहिये। लेकिन घर कुरूप हो गया है, पति घर से भागा हुआ है। **उसके घर से भागे होने का कारण ? घर एक शांति का, छाया का, विश्राम का स्थान नहीं रह गया।** इसलिये घर का चौका टूटता चला जा रहा है, होटलें बढ़ती चली जाती हैं। क्योंकि घर वह ठीक से खा भी नहीं पाता। वह भागा हुआ है होटल की तरफ। इसलिये घर में कितनी देर कम से कम रुक सके उसकी चेष्टा में रत रहे। और पत्नी घर अकेली पड़ गयी है। वह बच्चों को पाल रही है, बर्तन धो रही है, खाना बना रही है, कपड़े सी रही है। इस काम में कितनी देर वह रस ले ! यह काम उबा देता है। घबड़ा देता है। घर की दिवालों में बंध वह परेशान हो जाती है। वह वहां तैयार होती रहती है कि पति वापिस लौटे तो गुस्सा किस पर निकाले, उसका सारा गुस्सा वहाँ तैयार होता है, भरता है, गहरा होता है, वह पति के आते ही टूट पड़ती है। और पति उसी से भागा हुआ था। किसी तरह डरा हुआ कदम सम्हाल के घर की सीढ़ियां चढ़ आया और वह बात फिर टूट पड़ी। वह कल के लिये फिर भाग गया। और वह जितना भागेगा उतना क्रोध बढ़ेगा और जितना क्रोध बढ़ेगा वह उतना भागता रहेगा। घर का बुनियादी यूनिट, पहली इकाई ही विकृत और कुरुप हो गयी है।

इसलिये मेरी दृष्टि में किन्ही यज्ञों से शांति नहीं हो सकती। लेकिन वह पति पत्नी के बीच जो कलह का यज्ञ चल रहा है, अगर वह शांत हो जाय, अगर वहां सामंजस्य पूर्ण, एक मैत्री पूर्ण घटना घट जाय तो कुछ हो सकता है। लेकिन वह कैसे घटे ? उस घटने की पहली शर्त मैं मानता हूं कि स्त्री को व्यक्तित्व मिल जाय। क्योंकि मित्रता छायाओं से नहीं हो सकती, मित्रता व्यक्तियों से होती है। ठोस जीवन्त व्यक्ति से। और पुरुषों ने स्त्रियों को पोंछ के बिल्कुल (Shadow) छाया बना दिया। उनके पास व्यक्तित्व ही नहीं रहा। पुरुषों ने कहा उठो तो उठो, बैठो तो बैठो। पुरुषों ने कहा पूरब तो पूरब, पश्चिम तो पश्चिम, उन्होंने उनका सारा व्यक्तित्व पोंछ डाला है। कोई व्यक्तित्व नहीं रह गया। उस व्यक्तित्व को पोंछने का परिणाम एक ही हो सकता है, और वह परिणाम फलित हो गया है। मैत्री असंभव हो गयी है। **दो व्यक्तियों के बीच मैत्री हो सकती है। छाया और व्यक्ति के बीच मैत्री नहीं हो सकती।** इस व्यक्तित्व को लाने के लिये स्त्रीयाँ बहुत अधिक चेष्टा करती हैं। लेकिन उनकी चेष्टा बड़ी गलत है। वे या तो दूसरे (Substitue) खोज रही हैं, या पुरुषों जैसी होने की चेष्टा में संलग्न हैं। उन सबसे कोई अन्तर नहीं पड़ने वाला। स्त्री को तय करना पड़ेगा कि वह नारी होने के ठीक अर्थ को समझे और नारी होने के ठीक अर्थ को उपलब्ध हो जाय। नारी होने का ठीक अर्थ पुरुष से बहुत भिन्न है। और दोनों के व्यक्तित्व के भेद को भी थोड़ा समझना उपयोगी है। पुरुष एक्टीव है। पुरुष का सारा व्यक्तित्व क्रियात्मक है, विधायक है। स्त्री का सारा व्यक्तित्व पेसीव है। निषेधात्मक है। इस फर्क को समझ लेना जरूरी है। तो हम उनकी दोनों शिक्षायें, उन दोनों के जीवन का ढंग अलग तरह से सोचेंगे।

एक स्त्री किसी पुरुष को कितना ही प्रेम करती हो, तो भी कभी कोई स्त्री ने पुरुष के प्रति निवेदन नहीं किया है कि मैं तुम्हें प्रेम करती हूं। स्त्री कितना ही प्रेम करती हो तो भी वह प्रतीक्षा करती है कि पुरुष निवेदन करे। स्त्री पेसीव है। पेसीव का मतलब वह प्रतीक्षा कर सकती है। आक्रमण नहीं है। आक्रमण नहीं करेगी, पहल नहीं करेगी। पुरुष को ही आक्रमण करना होगा, पुरुष को ही पहल करनी होगी। पुरुष को ही पहला कदम उठाना होगा। स्त्री प्रतीक्षा करेगी। और बड़ी हैरानी की बात है अगर स्त्री पहल करे और आक्रमण करे तो पुरुष के लिये कभी प्रीतिकर न हो पायेगी। क्योंकि आक्रमण करने वाली और पहल

करने वाली स्त्री में पुरुष को पुरुष के ही दर्शन दिखाई देंगे। उसे स्त्री नहीं मिल सकेगी फिर वहाँ। **स्त्री अनंत प्रतीक्षा है। मौन प्रतीक्षा।** आक्रमण नहीं, अनाक्रमण। पुरुष आक्रमण है। (Agression) है। वह जायेगा, पहल करेगा। लेकिन अगर कोई पुरुष प्रतीक्षा करे तो कोई स्त्री उसे पसंद नहीं करेगी। कभी प्रेम नहीं कर पायेगी। इसलिए कोई स्त्री जैसे पुरुष को प्रेम नहीं कर पाती जो उसके पीछे छाया बन के चलने लगे। उसे कभी प्रेम नहीं कर पायेगी क्योंकि इसमें उसे एक स्त्री दिखाई पड़ेगी। स्त्री उसी पुरुष के प्रति आकर्षित होती है जो अगम्य मालूम पड़ता हो, अलंघ्य मालूम पड़ता हो, गौरी शंकर का शिखर मालूम पड़ता हो, दूर बहुत दूर जिसे पाना मुश्किल है। जो बुलाता है, लेकिन बहुत दूर है। जो पुकारता है लेकिन बहुत फासले पर है। जिसे पाना, जिसे छूना बहुत मुश्किल है, स्त्री का मन उसके लिये पागल आकांक्षा से भर जायगा। मैं यह कह रहा हूं कि Positive, Negative एक्टीव और पेसीव के, सक्रिय और निष्क्रिय के भेद को समझ लेना बहुत जरूरी है।

हम एक पत्थर को पानी में फेंकते हैं। तो पत्थर पानी में गिरता है, फौरन गड्ढा बना लेता है। पत्थर एक्टीव है, सक्रिय है, और पानी पेसीव है, वह फौरन गड्ढा बन जाता है। लेकिन बड़ा मजा यह है कि पत्थर नीचे गया कि पानी फिर अपनी जगह वापिस लौट आता है। **पेसीविटी निष्क्रियता, शक्तिहीनता नहीं** है। अगर एक पहाड़ से पानी का झरना गिरता हो, और नीचे पहाड़ पर पत्थर की चट्टानें पड़ी हों तो आज पत्थर की चट्टानें बहुत शक्तिशाली मालूम पड़ेंगी। क्योंकि झरना उन पर बिखर बिखर जायेगा, टूटेगा और बिखर जायेगा। और चट्टानें अकड़ी खड़ी रहेंगी। लेकिन सौ साल बाद झरना बह रहा होगा, चट्टानें रेत हो चुकी होंगी, उनका कोई पता न होगा। वह जो पहले दिन बहुत एग्रेसीव मालूम पड़ी थीं चट्टानें, टूटने को बिल्कुल राजी नहीं, और पानी जो बिल्कुल ही विनम्र मालूम पड़ा था, कि पत्थर ने जैसा कहा वैसा हो गया था, वह सौ साल में जीत गया। पुरुष की जीत प्राथमिक हो सकती है, अंतिम जीत स्त्री की हो जाती है। वह पेसीव, प्रतीक्षा है। वह अनंत प्रतीक्षा है। वह चुप पानी की तरह जगह दे देगी। प्रतीक्षा करेगी। धैर्य रखेगी। लेकिन पुरुष जो शिक्षा दे रहा है स्त्री को, वह उसे पुरुष बना रही है। वह भी अधीर हुई चली जा रही है। वह भी आक्रमक हुई चली जा रही है। वह भी हमलावर हो रही है। उसके परिणाम घातक हो रहे हैं। उससे स्त्रियों का मन अपने मूल स्वभाव से ही विच्युत हुआ चला जा रहा है। इसलिये पश्चिम में एक दुर्घटना घटी जो यहाँ भी घट जायेगी।

यहां स्त्री करीब करीब पुरुष के पास आ गई, पुरुष जैसी होकर। लेकिन उसने अर्थ खो दिया। उसने व्यक्तित्व की गरिमा, और गौरव, और संगीत, और काव्य सब खो दिया है। **उसमें जो विनम्रता थी खो दी है, जो उसका गुण थी। स्त्री को एक और तरह की शिक्षा चाहिये जो उसे संगीत पूर्ण व्यक्तित्व दे। जो उसे नृत्य पूर्ण, लयबद्ध व्यक्तित्व दे। जो उसे प्रतीक्षा की अनंत क्षमता दे। जो उसे मौन की, चुप होने की, अनाक्रमक होने की, प्रेम की और करुणा की गहरी शिक्षा दे।** सामान्यतः सभी स्त्रियाँ सोचती हैं कि उन्हें प्रेम उपलब्ध है। लेकिन प्रेम भी कला है जो उपलब्ध नहीं है। कोई पैदा होते से ही प्रेम करने में Success नहीं होता। मनुष्य एक अद्भुत प्राणी है। अगर हम अपने बच्चों को पैदा होने के बाद चलना न सिखायें तो बहुत संभव है, वह चलना सीखे ही नहीं। ऐसे बच्चे हैं। कलकत्ते के दो बच्चों को उठा के वह जो भेड़िये ले गये थे रात। फिर जंगल से उनको दो चार साल बाद पकड़ा जा सका, कोई बीस साल तीस साल पहले। तब उनकी उमर हो गई थी, कभी के उनको चलना शुरू कर देना चाहिये था। लेकिन भेड़ियों के पास रहने की वजह से वे दो पैर से नहीं चारों हाथ पैर से चलते थे। अभी लखनऊ के पास अभी चार पाँच वर्ष पहले एक लड़का पकड़ा गया। जिसकी उम्र चौदह साल थी। उसको भी भेड़िये ने अपने माल में पाल लिया था। वह भेड़ियों के बच्चों

के साथ पला था। चौदह साल का था। लेकिन चलता चारों हाथ पैर से था। उसे पता ही नहीं चला था कि दो से चले। और जब उसे पकड़ लिया गया तब बड़ी मुसीबत हुई छः महीने लग गये उसको सीधा खड़े करने में। क्योंकि उसकी हड्डी सब सख्त हो गई थी। वे मुड़तीं ही नहीं थीं। चौदह साल के होके भी वह एक शब्द भी नहीं बोल सकता था आदमी का। सिर्फ भेड़ियों जैसी आवाज करता था। छः महीने लग गए उसको सिर्फ राम शब्द बुलवाना सिखाने में। राम उसका नाम रख दिया था। तो यही बड़ी भारी घटना थी कि छः महीने में वह राम कहना सीख गया। लेकिन इससे वह इतना परेशान हो गया, यह भाषा का सिखाना, एक शब्द सिखाना, और दो पैर से खड़ा होना कि वह नौ महिने बाद मर गया। और डाक्टरों का कहना है कि मरने का कुल कारण इतना है कि उसे यह आदमी का होना इतना परेशानी दायक हुआ कि वह एकदम परेशान हो गया, उसकी नींद खतम हो गई। वह एकदम स्वस्थ था, वह जंगली जानवरों की तरह स्वस्थ था। वह कभी भी बीमार ही नहीं पड़ा था जंगल में। बड़ा शक्तिशाली था, लेकिन वह नौ महीने में आदमी के इन्तजाम में समाप्त हो गया। हम अपने बच्चों को चलना सिखाते हैं। तब ही वह चलना सीख पाते हैं।

असल में आदमी के भीतर अनंत संभावनायें हैं। आदमी बहुत Liquidity है। वह बहुत तरल है। उसे हम जो सिखाते हैं वह वही होना शुरू हो जाते हैं। लेकिन प्रेम के संबंध में बड़ा दुर्भाग्य है। आदमी को ऐसा ख्याल है कि प्रेम हम जानते ही हैं। वह एकदम सरासर झूठी बात है। और इसलिए उस प्रेम के किनारे ही हमारी नाव टकरा के नष्ट हो जाती है। न तो पुरुष प्रेम जानते हैं और न स्त्रियाँ प्रेम जानती हैं। प्रेम की बहुत बड़ी व्यवस्था और सुविधा होनी चाहिए जहाँ प्रेम सीखा जा सके। जैसे उदाहरण के लिए—जो आदमी प्रेम सीखेगा उस आदमी से इर्ष्या बिदा हो जाना चाहिये। क्योंकि इर्ष्या और प्रेम का अस्तित्व एक साथ नहीं हो सकता। लेकिन सभी स्त्रियाँ प्रेम करती हैं, सभी पुरुष प्रेम करते हैं लेकिन साथ में इर्ष्या का जहर पूरी तरह खड़ा रहता है। यह ऐसा ही है जैसे कि हमने फल तो बहुत अच्छा बोया, लेकिन रोज उसमें जहर भी पानी में सींच देते हैं। वह मीठा फल जो था, वह जहरीला हो गया। खतरनाक हो गया। **इर्ष्या जहाँ है वहाँ प्रेम संभव नहीं है।** इर्ष्या और प्रेम का कोई संबंध ही नहीं। लेकिन जैसा मैंने कहा, कि स्त्री और पुरुष के मनस् में एक फर्क है, पुरुषों का मन एक्टिव है, सक्रिय है। इसलिए पुरुषों का मूल दुर्गुण अहंकार है। और स्त्रियों का मन पेसीव है, निष्क्रिय है। इसलिए स्त्रियों का मूल दुर्गुण इर्ष्या है। **इर्ष्या निष्क्रिय हुआ अहंकार है। और अहंकार सक्रिय हो गई इर्ष्या है।** पुरुष अहंकार से भरे रहते हैं। और स्त्रियाँ इर्ष्या से भरी रहती हैं। उनका सारा चौबीस घंटे का जीवन जन्म से लेकर मरण तक इर्ष्या के केन्द्र की परिधि पर घूमता है। इसलिए एक स्त्री जब दूसरी स्त्री से मिलती है तो जो बात उसे सबसे पहले दिखाई पड़ती है, गहने क्या हैं, कपड़े क्या हैं, घड़ी कैसी है, घड़ी का पट्टा कैसा है, चप्पल कैसी है। सबसे पहले यह एकदम दिखाई पड़ जाता है। व्यक्ति नहीं दिखाई पड़ता है, यह सब दिखाई पड़ जाते हैं। यह उसके इर्ष्या के बिन्दु हैं। आश्चर्यजनक है, लेकिन सत्य है। दो स्त्रियों का साथ रहना बहुत कठिन मामला है। उनको घंटे भर भी साथ बैठा रखना बहुत कठिन मामला है। हाँ एक ही रास्ता हो सकता है कि वो तीसरी स्त्री की इर्ष्या में निंदा कर रही हों तो घंटे भर बैठ सकती हैं। **इर्ष्या जिनका जीवन आधार बन गया हो, उनसे प्रेम की संभावना कम हो जायगी।** लेकिन इर्ष्या ही उसका सारा व्यक्तित्व बन गया है। अगर घर को सजाया जा रहा है तो घर सजाने का रस नहीं है कारण, पड़ोस के घर से हो गयी इर्ष्या है। अगर कार की गद्दियाँ बदली जा रही हैं तो कार की गद्दियाँ बदली जायें, स्वच्छ हों, नई हों, अच्छी हों, यह कारण नहीं है। कलात्मक हों यह कारण नहीं है, पड़ोस के घर की गाड़ी की गद्दियाँ बदल गई हैं। सारा व्यक्तित्व जैसे इर्ष्या पर चल रहा है।

इसलिये स्त्रियों की फैशन का कोई भरोसा नहीं। कोई तीन महीने चलेगी, छः महीने चलेगी कि

कितनी देर चलेगी ! उसका कुल कारण इतना है कि एक स्त्री भी सारी स्त्रियों को इर्ष्या से भर सकती है, और फैशन फौरन बदल जायेगा ।

पश्चिम में तो कपड़ों के दूकानदार सुन्दर स्त्रियों को पाल के रखे हुए हैं जिनके कपड़े वह छः महीने में बदल देते हैं । उनके कपड़े बदले कि बाकी सभी स्त्रियों के पुराने कपड़े बेकार हो जाते हैं । फिल्म अभिनेत्रियों का सारी दुनिया के कपड़े वाले और फैशन के सामान वाले खरीद कर रखे हुए हैं । अभी मैं एक घटना पढ़ रहा था कि अमेरिका की एक बड़ी फिल्म अभिनेत्री थी, उसे कोई पूछने गया कि तुम्हारे चेहरे पर जो इतना लावण्य है, जो इतना सौन्दर्य है, इसका क्या कारण है ? उसने कहा कि पन्द्रह दिन बाद बता सकूँगी । उसने कहा कि क्यों अभी पता नहीं । उसने कहा अभी मेरी दो साबुनों की कम्पनियों से बात चलती है, जिससे ज्यादा तय हो जाय वही साबुन मेरे सौन्दर्य का कारण है । पन्द्रह दिन बाद यह तय होगा । अभी बातचीत चलती है । Negotiations चल रहे हैं । कौन कंपनी ज्यादा पैसा दे सकती है, वही साबुन मेरे सौन्दर्य का कारण बन जायगा । इसलिए साबुन की फोटो अकेली नहीं छपती । अकेली साबुन की फोटो से कोई प्रभावित न होगा, साथ में एक सुन्दर स्त्री छापनी पड़ती है । बस ! फिर वह साबुन और स्त्रियों के मन को पकड़ लेता है । क्या आपको पता है आज दुनिया की सारी उद्योग की व्यवस्था का पचहत्तर प्रतिशत स्त्रियों के साज सामान पावडर, साबुन, कपड़े इत्यादि में नष्ट हो रहा है । पहले पावडर खरीदना पड़ता है, फिर उस पावडर को धोने के लिए साबुन खरीदना पड़ती है । फिर साबुन पावडर को धो डालती है तो फिर पावडर खरीदना पड़ता है । पचहत्तर प्रतिशत सारे मनुष्य की शक्ति स्त्रियों की इस व्यवस्था में व्यय हो रही है । और वह रोज बदल जाती है । क्योंकि अगर एक ही साबुन चलती रहे तो कितने उद्योग पति इससे लाभ उठा सकते ? और अगर एक ही फैशन रहे तो फिर कपड़ों की कितनी जात पैदा की जा सकती ? फिर बहुत मुश्किल हो जाय । और इस सबके बुनियाद में स्त्री की इर्ष्या को समझ लिया गया है । आज धंधेबाज विज्ञापन दाता, सब स्त्री की इर्ष्या को समझ लिये हैं । यह तो मजे की बात है । मैं अंक आंकड़े पढ़ रहा था, आँकड़े में देख रहा था, तो मैंने यह किसी मित्र को लिखा था कि स्त्रियों की पसंद, जो वह खरीदती है, उसमें पुरुषों का कोई हाथ नहीं होता, "सौ" में से "सौ" मौकों पर । लेकिन एक मित्र को पूछा कि मैं यह जानना चाहता हूं कि पुरुष जो खरीद करते हैं उसमें स्त्रियों का कितना हाथ होता है ? तो उसने मुझे सब आँकड़े भेजे अमेरिका के एक नगर के आँकड़े थे । आँकड़े बड़े दंग करने वाले हैं । स्त्रियाँ अपनी जो चीजें खरीदती हों तो वह सौ प्रतिशत अपनी पसंद से खरीदती हैं । और पुरुष भी जो चीजें खरीदता है उसमें भी सत्तर प्रतिशत स्त्रियों की पसंद होती है । अगर गाड़ी किस रंग की खरीदनी है, उसमें सत्तर मौके पत्नि के रंग के चुनाव के होते हैं, तीस मौके पुरुष के चुनाव के होते हैं । पुरुष भी कौन से कपड़े पहने, इसमें भी सत्तर प्रतिशत स्त्रियाँ तय करती हैं, तीस प्रतिशत वह । इसलिए पश्चिम के विज्ञापन दाताओं ने पुरुष की फिक्र ही छोड़ दी । वे कहते हैं एक सौ सत्तर, दो सौ चीजों में से एक सौ सत्तर चीजें तो स्त्री को खरीदनी हैं । स्त्री की फिक्र कर लो, पुरुष की चिंता मत करो, उसे जाने दो । इसलिए सारा का सारा विज्ञापन का पूरा का पूरा धंधा स्त्री पर केन्द्रित होकर चल रहा है । अब वह दुकानें इसकी रिसर्च करती हैं । अमेरिका में एक दुकान ने रिसर्च की है तो उसने इस बात का पता लगवाने की कोशिश की है कि स्त्रियाँ सर्वाधिक किस रंग से प्रभावित होती हैं, तो अपने डब्बों पर वही रंग होना चाहिये । और इसकी उन्होंने फिक्र की, और पता लगा लिया उन्होंने सब रंगों के बाबत जांच पड़ताल की, तो अब जिस चीज का डब्बा बनाना हो मनोवैज्ञानिक सलाह देता है कि अगर इसको ज्यादा बेचना हो तो इसपर यह रंग डालना । स्त्री इस रंग से प्रभावित होती है । यह भी मनोवैज्ञानिक बताता है कि जब दुकान में चीजों को सजाओ तो अलमारी में किस उंचाई पर रखना, क्योंकि स्त्री की आंख किस कोण पर सर्वाधिक प्रभावित होती है, इसकी भी

रिसर्च चलती है। उन्होंने उसका भी अंदाज लगा लिया। अगर कोई चीज कम बेचनी हो तो उसे इतनी ऊंचाई पर रखना, और ज्यादा बेचनी हो तो इतनी ऊंचाई पर रखना, और बिलकुल न बेचना हो तो इतनी निचाई पर रखना वहां नजर ही नहीं जायगी उसकी। तो दुकानदार को जिस चीज में ज्यादा फायदा है, उसे स्त्री को आंख की ऊंचाई पर रख लेगा अलमारी में। अभी एक नयी उन्होंने फिक्र की। एक दुकान बहुत दिनों से उत्सुक थी। आज तो अमेरिका में उद्योग बिलकुल वैज्ञानिक होता चला जाता है। सारा उद्योग बिलकुल वैज्ञानिक होता चला जाता है, सारे बड़े उद्योग बड़े वैज्ञानिकों को अपने पीछे लगाये हुये हैं कि जांच पड़ताल वह करते रहें कि क्या लेना है स्त्रियों को। एक दुकान में इस बात की जांच पड़ताल की कि दुकान के काउन्टर पर जो लोग खड़े होते हैं, अगर स्त्रियां खरीदने आती हैं, अपनी सारी खरीद स्त्रियां करती हैं। तो स्त्रियों से पूछना कि क्या लेना है आपको? इससे दुकान को नुकसान होता है? क्योंकि अगर स्त्रियों से पूछा जाय कि क्या लेना है आपको, तो उन्हें घर से तय करके आना पड़ा है कि क्या लेना है। उनको अगर दो चीजें खरीदनी हैं, तो फिर वह दो चीजें बता सकती हैं। इसलिये मनोवैज्ञानिकों ने उन दुकानदारों को सलाह दी कि काउन्टर पर से आदमियों को हटा दो। तो दरवाजे पर स्त्रियों को छोटा ठेला दे दिया जाता है ठेलागाड़ी। और उस दुकान में अंदर भेज दिया जाता है कि तुम्हें जो पसंद हो वह निकाल के ठेलागाड़ी में रख लाओ। तो वह जो चीजें खरीदने आती है, उनकी तो फिक्र ही भूल जाती है। जो चीजें उसने कभी न खरीदीं होती वह दुकान में एकांत पाके और चुनके अपनी गाड़ी में डाल के बाहर आ जाती है। इसका हिसाब लगाया तो पता चला कि दस चीजें जो स्त्रियां इस तरह खरीदती हैं, अगर उनसे पूछा गया होता कि तुम्हें क्या चाहिये? और नौकर ने लाके चीजें ही दी होतीं तो वे केवल तीन चीजें खरीदतीं, इस हालत में उनने दस चीजें खरीदीं। तीस चीजों की बिक्री होती, अब सौ चीजों की बिक्री हो गयी। सत्तर चीज वे व्यर्थ ही खरीद के लौटती हैं। लेकिन वह व्यर्थ खरीदने का कारण क्या है? कपड़े बदलने का इतना कारण क्या है? सौंदर्य के प्रसाधनों की इतनी बिक्री का कारण क्या है? ईर्ष्या, इसके बहुत गहरे में कारण है। चारों तरफ ईर्ष्या पकड़े हुए है। **स्त्री के मन से ईर्ष्या नष्ट न हो, तो स्त्री कभी भी ठीक अर्थों में प्रेमपूर्ण नहीं हो सकती। ईर्ष्या का जहर उसके सारे जीवन को खा जाता है।** ईर्ष्या भय दे देती है। ईर्ष्या डरा देती है, तो स्त्री के समझ के बाहर ही हो जाता है। अगर उसका पति किसी दूसरी स्त्री को गौरसे भी देखले तो जहर की लहर फैल जाती है। इसलिये अगर कोई पति सड़क पर बिलकुल सम्हला हुआ चल रहा हो, और इधर उधर न देखता हो तो समझ लेना कि उसकी पत्नी आसपास है। और अगर कोई पुरुष सड़क पर बिलकुल मौज से चल रहा हो, और कोई स्त्री साथ में हो, सब तरफ देख रहा हो, प्रसन्न हो तो समझ लेना कि साथ में पत्नी नहीं है, किसी और की पत्नी हो सकती है। ईर्ष्या ने भय ही पैदा कर दिया है। पुरुष स्त्री से डरा हुआ है, घबड़ाया हुआ है। एक मुक्त और सहज संबंध नहीं रह गया। सब Strained हो गया सब तन गया है। तो घर शांत कैसे हो सकता है। **शांति के फूल तो बहुत सहजता में खिलते हैं।** जहां ईर्ष्या नहीं है, जहां समझ है जहां प्रेम है, जहां भय नहीं है, अभय है। और जहां एक दूसरे को समझने की चेष्टा है। एक दूसरे की कमजोरी भी, एक दूसरे के दुःख और पीड़ा को भी, एक दूसरे से सहानुभूति रखने की भी क्षमता है। और ध्यान रहे, पुरानी शिक्षा ने इस तरह की बातें सिखायी हैं कि हम एक दूसरे को कभी समझ ही नहीं पाते। पुरानी शिक्षा ने ऐसे आदर्श दिये हैं कि उनकी वजह से हम बिलकुल विक्षिप्त हुए चले जाते हैं। यह बहुत आश्चर्यजनक नहीं है कि अगर रास्ते पर निकले हैं और कोई सुन्दर पुरुष किसी स्त्री को दिखाई पड़े तो उसे अच्छा न लगे। कुछ आश्चर्यजनक नहीं है। सुन्दर जो है वह अच्छा लग सकता है। जरूरी नहीं है कि वह पति हो। और जरूरी नहीं है कि अच्छा लगने में कोई पाप हो गया। और अगर एक सुन्दर स्त्री दिखाई पड़े

तो किसी पुरुष को अच्छी लग सकती है। वह दो क्षण देख सकता है। इसमें न कुछ पाप है। लेकिन इसको भी पाप बना दिया है। अपराध बना दिया है। **वह हमारी ईर्ष्या ने जो जाल बुना है सिद्धांतों का उसने बहुत उपद्रव खड़ाकर दिया है। उसकी बजह से कोई भी सहज नहीं हो पाया।** और जब हम सहज नहीं हो पाते तो उसका परिणाम होता है एक दूसरे पर क्रोध से भर जाते हैं। पति और पत्नियां एक दूसरे से क्रोध से भरे हुए हैं, बजाय एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता के बजाय इसके कि पत्नी ने समझा हो कि पति ने उसके जीबन को धन्य किया, पत्नियाँ समझ रहीं हैं कि पति ने जीवन को नष्ट किया। बजाय इसके कि पति समझे कि पत्नी ने उसके जीवन को सौरभ दिया, सुगंध दी, पति समझ रहा है कि कहां से, इस स्त्री के उपद्रव में पड़ गये, यह सब नष्ट हो गया।

मैंने सुना है कि एक आदमी की पत्नी मर गयी। बड़ा दुखी हुआ। फिर अर्थी उठायी गई। अर्थी उठाके लोग बाहर आये। सामने एक नीम का वृक्ष था उससे अर्थी टकरा गयी। वह स्त्री मरी नहीं थी, वह सिर्फ बेहोश थी। वह एकदम चौंक के उठ गयी। घर में बड़ी हैरानी हो गई, सब लोग बिदा करने आये थे वह सब हैरान हो गये। फिर तीन साल बीत गये। फिर वह पत्नी दुबारा मरी। फिर अर्थी निकलने लगी। उसका पति रो रहा था। लोग अर्थी निकाल रहे थे, उसने कहा भाइयो जरा सम्हाल के निकालना, कहीं नीम से फिर न टकरा जाय। क्योंकि पिछली बार यह भूल हो गयी थी। अब ऐसे वह रो भी रहा है पत्नी के मर जाने पर, लेकिन भीतर का कोई कोना उसका प्रसन्न भी होता है। इतनी ही दुविधा हो रही है हमारे संबंधियों में। स्त्री और पुरुष के बीच इतनी ही दुविधा हो गयी है। पत्नी रोयेगी पति के मर जाने पर। कितनी बार उसने सोचा है कि इससे छुटकारा ही हो जाय, यह समाप्त ही हो जाय पति रोयेगा पत्नी के मरने पर और कितनी बार उसने नहीं सोचा है कि इससे न मिलना होता तो ही अच्छा होता, यह मर ही जाय तो अच्छा है। यह भी साथ में चल रहा है। यह दोनों बात साथ चलेंगी तो हमारे संबंध शांतिपूर्ण, आनंदपूर्ण कैसे हो सकते हैं ? **और अगर परिवार ही शांतिपूर्ण न हो, तो यह पृथ्वी शांतिपूर्ण नहीं हो सकती।** इसलिये दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि स्त्री को थोड़ा सोच विचार, खोजबीन करनी जरूरी है। बड़े सामूहिक तल से कि ईर्ष्या कैसे नष्ट की जाय ? ईर्ष्या के रहते स्त्री का व्यक्तित्व कभी प्रेम पूर्ण नहीं हो सकता। **और प्रेम ईश्वर स्त्री का प्राण है। उसकी आत्मा है। अगर वह प्रेम पूर्ण न हो पाये तो बस वह अधूरी रह जायेगी। उसके भीतर कुछ हमेशा बढ़ने को रुका रह जायेगा। पीड़ा और दुःख और परेशानी उसको घेर लेगी।** अगर कोई स्त्री ठीक से प्रेम न कर पाये तो हजार बीमारियां उसको पकड़ लेंगी। मनोवैज्ञानिक तो कहते हैं कि स्त्रियों के सारे हिस्टीरिया और बीमारियों में अस्सी प्रतिशत बीमारियां उनको प्रेम की उपलब्धि नहीं हो पायी उसके ही कारण है। अगर किसी स्त्री को जीवन में प्रेम पूरी तरह मिल जाय, वह अचानक स्वस्थ हो जाती है। उसके जीवन का फूल ऐसा खिल जाता है जैसा कभी भी नहीं खिला था। उसकी सब बीमारियां बिदा हो जाती है। उसके सारे व्यक्तित्व में एक तरंग शांति की छा जाती है। उसके सारे व्यक्तित्व में एक सुगंध आ जाती है, जो कभी भी नहीं थी। उसका व्यक्तित्व ही बदल जाता है। उसको एक नया व्यक्तित्व ही मिल जाता है। एक नयी आत्मा ही उपलब्ध हो जाती है। लेकिन वह तो उपलब्ध नहीं हो पा रही। उसको उपलब्ध करने के हम बड़े गलत उपाय कर रहे हैं। एक तो मैंने कहा कि हम यह उपाय कर रहे हैं कि कपड़े लत्ते बदलें, यह करें, वह करें, उससे कोई रोनक न आयेगी जो प्रम से आती है। कोई पावडर कोई व्यवस्था उस रोनक को न ला सकेगी। आँखों में वह चमक न ला सकेगी, जो प्रेम ले आता है। चमड़ी पर कोई चमक नहीं ला सकेगी जो प्रेम ले आता है। अब तो इस पर सोचना शुरू हो गया है कि प्रेम के पास भी अपने तरह की Vitality अपने तरह के Vitamins हैं। और हो सकता है, भविष्य में हमें कभी यह समझना पड़े कि प्रेम के पास जैसे Vitamins हैं, शायद वैसे Vitamins किसी और में नहीं है।

एक भूखा आदमी भी प्रेम मिल जाय उसे तो ऐसा प्रफुल्लित हो जाता है जैसे उसके जीवन में सब तरफ नयी शक्ति के स्रोत और झरने आ गये। जैसे उसकी जिंदगी सब बहाल हो गयी। लेकिन यह सब कुम्हला गया और उस कुम्हलाने की जड़ में नारी है। और उस नारी को उस स्थिति में लाने में पुरुष का हाथ है। पुरुष ने उसका व्यक्तित्व छीन लिया है। उसको दबाके रख दिया। उसको पजेस कर लिया। उसका मालिक बन गया। उसको गुलाम बना डाला। और स्त्री गुलाम बनने को राजी हो गयी। दोनों का हाथ है। स्त्री मिटने को राजी हो गयी। स्त्री अपने को छाया बनाने को राजी हो गयी। दोनों का हाथ है, और दोनों के इस हाथ ने बहुत अशांति पैदा कर दी। इतना तनाव है, कि अगर हम एक दूसरे की खोपड़ी खोल सकें और खोपड़ी के भीतर से सारा तनाव बाहर निकाल सकें, तो हम बहुत दंग रह जायेंगे, इतना छोटा सिर और इतना तनाव। इतनी बेचैनी ? इतनी परेशानी ! इतनी चिंता ! इतना दुःख ! घबड़ाने वाला है। इसलिये कभी हम अपने भीतर भी नहीं झांकते। **स्त्रियां तो बिलकुल नहीं झांकतीं, वह तो बाहर ही लगी रहती हैं पूरे समय**। वह कभी भीतर नहीं झांकती। न झांकने का कारण है भीतर, भीतर बहुत विरस हो गया है। भीतर कुछ रस नहीं रह गया क्योंकि भीतर इतना विरस हो गया इसलिए स्त्रियां Creative नहीं हो पातीं। सृजनात्मक नहीं हो पातीं। यह दंग करने वाली बात है। होना तो यह चाहिये था कि स्त्रियों से अच्छी पेंटिंग किसी ने भी न बनायी हो। पुरुष को हार जाना चाहिये लेकिन अब तक कोई स्त्री बड़ी पेन्टर नहीं हुई, जिसके चित्र प्रथम कोटि में रखे जा सकें। होना तो यह चाहिये था कि काव्य में पुरुषों की कोई गति न हो पाती लेकिन काव्य की दिशा में भी स्त्री का कोई बड़ा काम नहीं है। आश्चर्यजनक है यह काव्य और यह संगीत, यह सब छोड़ दें हम। जानके हैरानी होगी कि पाक शास्त्र में भी जितनी खोजें हैं, वह सब पुरुष की हैं, स्त्री की कोई खोज नहीं। और आज भी जमीन पर जो बड़े रसोइये हैं वे पुरुष हैं, स्त्रियां नहीं। आज भी कोई होटल किसी स्त्री को रसोईयन रखने को राजी नहीं है। उसकी क्रियेटीविटी उसकी सृजनात्मक होने की क्षमता ही उसमें खो गई है। वह कुछ निर्माण ही नहीं कर पाती, वह सिर्फ दोहराये चली जाती है। जो खाना कल बनाया था, वह खाना आज भी बना रही है। जिस भांति कल घर साफ किया था, आज भी वही ढंग से साफ कर रही है। क्या कारण है ? यह सृजनका स्रोत जबकी स्त्री में ज्यादा होना चाहिये क्योंकि वह संतति की जन्मदात्री है। वह नौ महिने तक बच्चों को पेट में रखती है, फिर उन्हें बड़ा करती है। **वह मनुष्यों को भी पैदा करती है और निर्माण करती है, और दूसरा निर्माण उससे क्यों हो नहीं पाता** ? जरूर कुछ कारण है। सच तो यह है कि वह बच्चों की मां भी करीब करीब मजबूरी में बनती है। वह भी उसको प्रसन्नता नहीं रह गयी। अगर उनका वश चले, और जिन देशों में उसका वश चल रहा है, उसने बच्चों से इन्कार कर दिया।

हम अगर हिंदुस्तान जैसे देश में जनसंख्या से परेशान हैं, फ्रांस जैसे देश में जहां कि स्त्रियाँ सर्वाधिक शिक्षित हो गयी हैं, वहां फ्रांस की सरकार चिंतित है कि कहीं ऐसा न हो कि जनसंख्या गिरती जा रही है कि कहीं ऐसा न हो कि मुल्क सिकुड़ता जाय और पास पड़ोस के लोग ज्यादा हो जायें, हम कल मुसीबत में पड़ जायें। फ्रांस की जनसंख्या तीस साल से स्थिर है। और इधर पांच साल से नीचे गिर रही है। तो फ्रांस की सरकार घबड़ा गयी है कि क्या होगा। स्त्रियों ने बच्चे पैदा करने से इन्कार कर दिया। क्योंकि स्त्रियां यह कहती हैं कि नहीं। क्या कारण है, सृजनात्मकता से इतना विरोध ? उन्होंने पहले चित्र नहीं बनाये, कविता नहीं की ठीक था, अब यह कहती हैं बच्चे भी नहीं बनायेंगे। क्यों ? उनके भीतर इतना दुख और पीड़ा है कि बनाने का ख्याल ही नहीं आता। सृजन पैदा होता है आनंद से। सृजन की धारा फूट पड़ती है जब कोई आनंदित होता है तो सृजन करना चाहता है। और जब कोई दुखी होता है तो विध्वंश करना चाहता है।

●●●

(समापन अगले अंक में)

आचार्य श्री के आगामी देश व्यापी कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	संयोजक
१५ एवं १६ मार्च ७०	जबलपुर (शहीद स्मारक भवन)	प्रवचन	श्री भीकम चंद, जीवन जागृति केन्द्र, ३८६, हनुमानताल, जबलपुर फोन : २६५७
२० मार्च ७०	दिल्ली	—	श्री लाला सुन्दरलाल जी, जीवन जागृति केन्द्र, ४१, यू० ए० बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–६ फोन : २२७६५५
२१, २२, २३ एवं २४ मार्च ७०	लुधियाना	सत्संग	श्री कपिल मोहन, जीवन जागृति केन्द्र, ६०-ए, इंडस्ट्रियल एरीआ, लुधियाना
२५ मार्च ७०	दिल्ली	—	श्री लाला सुन्दरलाल जी, जीवन जागृति केन्द्र, दिल्ली–६
२, ३, ४ एवं ५ अप्रेल ७०	अमरावती	सत्संग	श्री एस० एल० श्रीवास्तव, जीवन जागृति केन्द्र, खापर्डे बगीचा, अमरावती

जीवन संगीत से आलोकित : नई साज सज्जा में

ज्योति शिखा

(आचार्य श्री के विचारों की आध्यात्मिक त्रैमासिकी)

संपादक : श्री महिपाल

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
एक प्रति : १)२५ न० पै०

प्रकाशक : जीवन जागृति केन्द्र,
रूम नं० ५३, एम्पायर बिल्डिंग,
डा० डी० एन रोड, बंबई : १

एक शुभ समाचार :

आचार्य श्री की ज्योतिर्मय वाणी का मासिक बुलेटिन

सिंहनाद

(गुजराती भाषा में)

मूल्य : वार्षिक २ रु०
एक प्रति २० न. पै.

(शीघ्र सदस्यता ग्रहण करके पावन आयोजन में योगदान कीजिए)

प्रकाशक : श्री नटु भाई ए० मेहता,
युक्रांद एवं जीवन जागृति केन्द्र परिवार,
२१, संस्कार सोसाइटी, टैगोर रोड,
सुरेन्द्र नगर।

आचार्य श्री का प्रकाशित साहित्य

	हिन्दी	गुजराती	मराठी
१. साधना पथ	३।००	३।००	३।००
२. क्रांति बीज	३।००	२।५०	२।५०
३. सिंहनाद	१।५०	१।२५	३।००
४. मिट्टी के दिए	३।००	३।५०	—
५. पथ के प्रदीप	३।००	३।००	८।००
६. संभोग से समाधि की ओर	३।५०	३।५०	—
७. आचार्य रजनीश समन्वय, विश्लेषण, संसिद्धि	७।५०	—	—
८. मैं कौन हूं ?	२।००	२।००	—
९. नए संकेत	२।००	१।७५	—
१०. अज्ञात की ओर	२।००	२।००	—
११. सत्य की खोज	३।००	—	—
१२. अंतर्यात्रा	३।५०	—	—
१३. शांति की खोज	२।००	—	—
१४. सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	१।२५	१।५०	—
१५. सूर्य की ओर उड़ान	१।००	१।००	—
१६. प्रेम के पंख	०।७५	०।७५	०।७५
१७. कुछ ज्योतिर्मय क्षण	१।००	०।७५	—
१८. अमृत कण	०।६०	०।५०	०।५०
१९. अहिंसा दर्शन	०।५०	०।५०	०।५०
२०. नई दिशा, नई बात	०।३०	—	—
२१. न आंखों ने देखा न कानों ने सुना	०।१५	—	—
२२. क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार	०।३०	—	—
२३. बिखरे फूल	०।३५	—	—
२४. जीवन और मृत्यु	—	१।००	—
२५. नए मनुष्य के जन्म की दिशा	०।७५	०।७५	—
२६. अस्वीकृति में उठा हाथ (भारत, गांधी और मेरी चिंता)	५।००	—	—

प्राप्ति स्थल :

[१] जीवन जागृति केन्द्र, रूम नं. ५३, एम्पायर बिल्डिंग, डा० डी. एन. रोड, बंबई : १

[२] मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–७।

[३] स्वदेशी वस्तु भंडार, जामनगर।

[४] आर. अंबानी एंड कं०, अपोजिट : जिमखाना, राजकोट।

[५] चंद्रकांत पटैल, आसोपालव, बैंक आफ इंडिया के सामने, रावपुरा, बड़ौदा।

[६] मोतीलाल बनारसी दास, नेपाली खपरा वाराणसी।

[७] मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना।

[८] भारतीय संस्कृति भवन, माई हीरागेट, जलंधर शहर।

[९] नरसिंह भाई पटैल, सहकारी मुद्रणालय, कोठारी मार्ग, सुरेंद्र नगर।

[१०] सस्तु किताब घर, पथ्थर कुवां, रिलीफ रोड, अहमदाबाद।

[११] बालगोविंद कुबेरदास, गांधी रोड, अहमदाबाद।

[१२] सर्वोदय साहित्य भंडार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर—२

[१३] हीराभाई मेहता, पांचघर, ७०, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता : १

[१४] सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर।

[१५] युनिव्हर्सल बुक सर्विस, सिटी कालेज के सामने, जबलपुर।

[१६] श्री आर. के. पुंगालिया, १०१, टिम्बर मार्केट, पूना–२

[१७] श्री महेन्द्र कुमार मानव, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०)

[१८] श्री सौभाग्यचंद्र तुरखिया, २ प्रभात सोसाइटी, सुरेन्द्र नगर।

SYNTROFIX PIGMENT EMULSION PASTES

FOR

UNSURPASSED BRILLIANCY OF YOUR PRINTS

Available in variety of Shades :

SYNTROFIX BRILLIANT LEMON—YELLOW
GOLDEN—YELLOW
ORANGE
GREEN
BLUE
RED
BROWN
BLACK

Manufacturers :

SYNDET PRIVATE LIMITED

OFFICE : Prajapati Building, Khadia Char Rasta, AHMEDABAD No. 1
Tele. : 23682

FACTORY : Dudheshwar Road, Opp. Rustom Mills, AHMEDABAD No. 1
Tele : 25732

होली के अवसर पर आपका स्वागत है

काशीराम हुलासीराम गैस लाइट मर्चेन्ट

५४५, पटेल मार्ग (बेलबाग) जबलपुर

प्रो०-जमनाबाई

हमारे यहाँ गैस बत्तियाँ किराये पर मिलती हैं, स्टोव व गैस बत्ती रिपेयरिंग गारन्टी से होती है।

नोट : दो चार दिन पहले आर्डर देने पर १५० गैस बत्तियाँ मिल सकती हैं।

होली के शुभ अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन

आकर्षक चूड़ियाँ, लेडीज पर्स, इमीटेशन ज्वेलरी, शृंगार सामग्री इत्यादि के विक्रेता

जैन-ज्वेलर्स

गंजीपुरा, नार्मल स्कूल रोड, जबलपुर

होली पर हार्दिक स्वागत है

न्यू लाईट टेलर्स

(बेलबाग थाने के पास) जबलपुर

पेन्ट स्पेशलिस्ट

उत्तम सिलाई एवं अच्छी फिटिंग के लिए सेवा का अवसर दीजिये

प्रो०-जी. पी. ठाकुर

होली के शुभ अवसर पर हार्दिक स्वागत

प्रेम टेलर्स

बेलबाग रोड, जबलपुर

टेरीलिन तथा ऊनी वस्त्रों के कुशल एवं अनुभवी कारीगरों द्वारा

आधुनिकतम सिलाई के लिए अवश्य पधारें

आपका संतोष ही हमारी सफलता है।

प्रो०--प्रेमचंद एन्ड सन्स

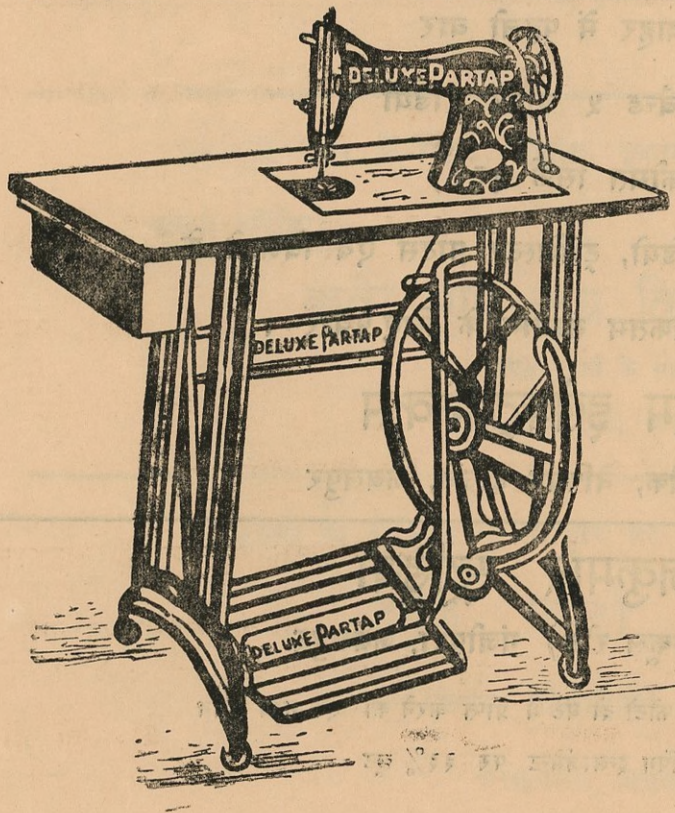

होली के त्यौहार पर अतिरिक्त लाभ उठाइये

सर्वश्रेष्ठ मशीन में एक है

डीलक्स प्रताप सिलाई मशीन

लकड़गंज, मस्जिद के सामने

जबलपुर

प्रो०—लक्ष्मणदास विश्वकर्मा

कूपन

इसे काटकर लाने वाले ग्राहक को ५% कमीशन दिया जावेगा।

होली से एक माह तक

डीलक्स प्रताप सिलाई मशीन

Look Smart With Our Dresses

TAILORED AT

ROSE TAILORS

Marhatal, JABALPUR

शहर में पहली बार

५ बैन्ड ५ वाल्व रेडियो

कीमत सिर्फ १६५)

फैन्सी लाईट्स, रेडियो, ट्रांजिस्टर पार्टस एवं बिजली के

अन्य आधुनिकतम सामान के लिए पधारें ।

रश्मि इलेक्ट्रानिक्स

रसल चौक, नेपियर टाउन, जबलपुर

राजकुमार स्टूडियो

(नार्मल स्कूल रोड) गंजीपुरा, जबलपुर

अर्जेन्ट पासपोर्ट साइज फोटो दो घंटे में प्राप्त करने का एक मात्र स्थान

डेव्हलपिंग इन्लार्जमेन्ट पर ३३% छूट

होली के अवसर पर आपका स्वागत करता है

MOHAN LIGHT HOUSE

मोहन लाइट हाउस

७५१ घमापुर (शीतलामाई के पास) जबलपुर

हमारे यहाँ बिजली का सामान, लाऊडस्पीकर, शामियाने और क्राकरी वगैरह किराये पर मिलते हैं।

होली के अवसर पर आपका हार्दिक स्वागत करता है

सुपर व्हाइट ड्राय क्लीनर्स

राँझी बाजार, जबलपुर

गर्म व सिलकन कपड़ों की उत्तम धुलाई व रंगाई का एक मात्र स्थान

आपका संतोष ही हमारी सफलता है।

प्रो०—कल्लूराम कनौजियाँ

जबलपुर नगर में—प्लाट, मकान, दूकानें खरीदनें एवं बेचने हेतु

संपर्क कीजिए

कुबेर-भूमि क्रय विक्रय निगम

(कांति स्टोर्स के सामने)

१५, लार्डगंज, जबलपुर

होली के रंग-बिरंगे त्यौहार पर अनेक शुभ कामनायें

इमेज फोटो स्टूडियो

उत्कृष्ट फोटोग्राफी के लिए

कछियाना, जबलपुर

"युक्रांद" आपके विज्ञापन का स्वागत करता है–

विज्ञापन दरें

कव्हर अंतिम पृष्ठ : २००)
कव्हर द्वितीय एवं तृतीय पृष्ठ : १५०)
भीतर का पूरा पृष्ठ : ७५)
भीतर का आधा पृष्ठ : ४०)

आज ही अपना विज्ञापन निम्न पते पर भेजें :

अरविन्द कुमार, युक्रांद प्रकाशन
कमला नेहरू नगर, जबलपुर, (म० प्र०)

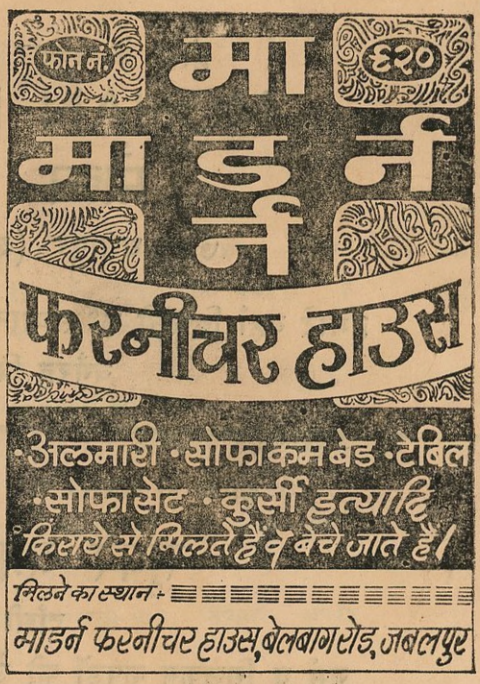

उत्तम तम्बाकू और कुशल कारीगरों से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

मोहनलाल हरगोविंददास

जबलपुर म० प्र०

मानसेवी संपादक : अरविन्द कुमार । सह-संपादक : आलोक कुमार पाण्डे ।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्द कुमार, कमला नेहरू नगर, जबलपुर ।

मुद्रण : जबलपुर को-आपरेटिव प्रिंटिंग प्रस, गोलबाजार, जबलपुर से मानसेवी संपादक अरविन्द कुमार के लिये मुद्रित

मुखपृष्ठ रेखाकृति : श्री वृन्दावन सोलंकी, जूनागढ़ ।

वर्ष : १ ।। अंक : १८ ।। १६ मार्च १९७० ।। मूल्य : एक प्रति : ०.६० न० पै० ।।

।। वार्षिक : १२ रु० ।।

इस माह के अंतिम सप्ताह तक प्रकाशित हो रही है :

आचार्य रजनीश की नई कृति —— "प्रभु की पगडंडियाँ"

(१९६९ नारगोल, साधना शिविर में दिए गए प्रवचन)

प्रकाशक · जीवन जागृति केन्द्र, बंबई ।

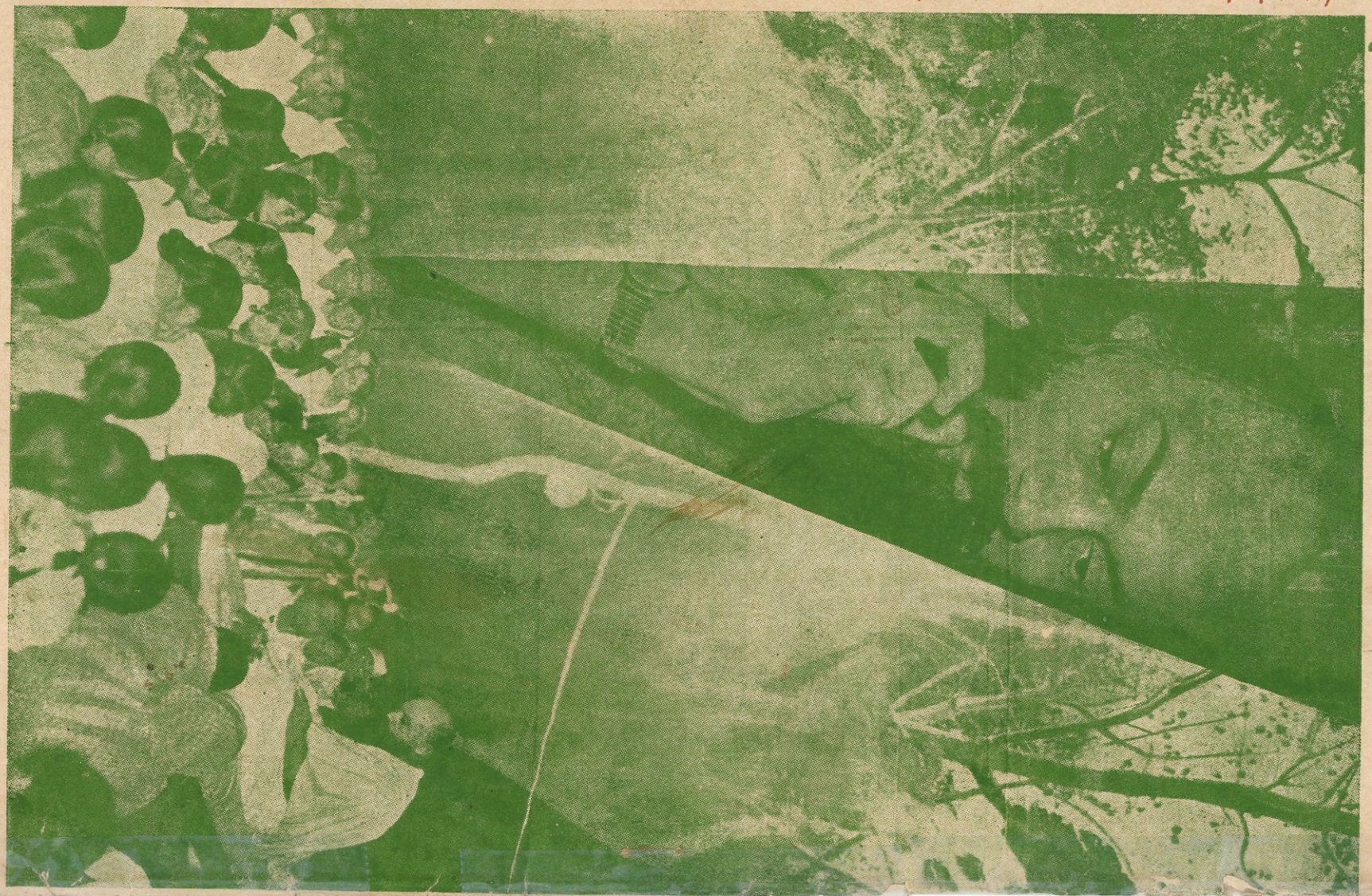

(चित्र : दीनूरावल, राजकोट)